मुख़्तसर होते हुए भी ज़िन्दगी बढ़ जाएगी
माँ की आँखें चूम लीजिए रोशनी बढ़ जाएगी

माँ का आँचल

यानी अज़मते वालिदैन

मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची

ग़ाज़ी किताब घर गंगवल बाज़ार बहराइच (यूपी)

786/92

मुख़्तसर होते हुए भी ज़िन्दगी बढ़ जायेगी
माँ की आखैं चूम लीजिए रोशनी बढ़ जायेगी

अज़ मुनौवर राणा

माँ का आँचल

यअनी अज़मते वालिदैन

मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची

9870742302

silicon.computer@yahoo.com

नाशिर : ग़ाज़ी किताब घर साबिरी यतीम ख़ानह , जामिअह सरकरे आला हज़रत गंगवल बाज़ार , ज़िला बहराइच शरीफ़, यू-पी(इंडिया)

नाम किताब	:	माँ का आँचल
लेखक	:	मौलाना सिराजुल क़ादरी बहराइची
कंप्यूज़िंग	:	**Silicon Computer 9833 7070 24**
सने इशाअत	:	2012/1433h हि.
तादाद	:	1100
हदियह	:	Rs.20/=

मिलने के पते

न्यु सिलवर बुक ऐजेन्सी, मुहम्मद अली रोड मुम्बई
नाज बुक डिपो, मुहम्मद अली रोड मुम्बई
इक़रा बुक डिपो, मुहम्मद अली रोड मुम्बई
बुक सिटी, मुहम्मद अली रोड मुम्बई
मकतबह क़ादिरयह, मस्जिद क़रतबह जो गेश्वरी वेस्ट
कुतुब ख़ानह अमजदियह, देहली
लतीफ़ियह बुक डिपो, नागपुर
रहीमियह बुक डिपो, कलकत्तह
नय्यर बुक सेलर, इलाहाबाद
मंसूर बुक सेलर, दरगाह शरीफ़ बहराइच
ग़ाज़ी बुक डिपो, दरगाह रोड बख़्शी पुरा, बहराइच
जमील बुक डिपो,घनटा घर बहराइच
फ़लाही बुक डिपो, वाराणसी
नसीम बुक डिपो, वाराणसी
हनीफ़ बुक डिपो, नागपुर
ताज बुक डिपो, नागपुर

निशाने मंज़िल

शरफ़े इन्तिसाव

इस्लाम की उन मुक़द्दस शहज़ादे और शहज़ादियों के नाम

जिन के घरों में नूर की किरनैं जगमगा रही हैं, जिन के क़ुलूब ख़ौफ़े इलाही से पिघल रहे हैं, जिन की पेशानियों में सजदों की तड़प है और जिन के बच्चे और बच्चियाँ इस्लामी माहौल में परवान चढ़ रहें हैं। जिन का वज़ीफ़ह है।

मैं सो ज़ाऊँ या मुस्तफ़ा कहते कहते

खुले आंख सल्ले अला कहते कहते

और

उन तमाम हुफ़्फ़ाज़ व क़ुर्रा व उलमा और आलिमह, फ़ाज़िलह क़ारियह के वालिदैन के नाम जिन्होंने अपनी औलाद को अच्छी तरबिय्यत और अच्छी तअलीम देकर दीन व दुनिया की सुरख़ुरूई हासिल की।

परवर दिगारे आलम उन सब की क़बरों पर रहमत व नूर के फूल बरसाये। (आमीन)

वालिदैन की दुआओं का समर

सिरजुल क़ादरी बहराइची

तक़रीज़े जमील

ख़तीबे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामह मुहम्मद अमीनुद्दीन ख़ान
रज़वी साहिब क़िबलह बहराइची

मेरी मश्शातगी की क्या ज़रूरत हुस्ने मअना को
कि फ़ितरत ख़ुद ब ख़ुद करती है लालह की हिना बंदी

अल्लामह सिराज़ुल क़ादरी साहिब जमाअते अहले सुन्नत के मुअतमद व मुस्तनद आलिमे दीन और कोहनह मश्क़, मज़हबी

अदीब व क़लम कार हैं। मसलक व मशरब के तईं निहायत मुख़्लिस और वफ़ादर हैं, यही वजह है कि बहुत क़ीमती हैं और **इस्लामी हीरे** नामी मअरूफ़ व मक़्बूले अवाम व ख़्वास किताब के मुसन्निफ़ हैं और रज़वियत के लअले बदख़्शाँ हैं, मौसूफ़ के शबो रोज़ इशाअते सुन्नियत व तहफ़्फ़ुज़े मसलके आला हज़रत में गुज़रते हैं आप के सीने में तहफ़्फ़ुज़े सुन्नियत का दर्दमंद दिल मौजूद है, इसी लिए आप के क़लम के साये में २५ ईमान अफ़रोज़, बातिल सोज़, शाहकार किताबें अवाम व ख़वास के मुतालअ में आकर ख़िराजे तहसीन हासिल कर चुकी हैं जिस में **मुजरिम अदालत में** नामी किताब पढ़ने के बअद बहुत से बद अक़ीदह ताइब होकर अपने सीनों में इश्क़े रसूल की शमअ रोशन कर चुके हैं। यह सब आप के मुर्शिदे बरहक़ हुज़ूर ताजुश्शरीअह की निसबत का फ़ैज़ान है, हमारे मम्दूह के रात व दिन के औक़ात मुक़र्रर हैं जिस पर निहायत पाबंदी से आमिल हैं, मुख़्तिलिफ़ मौज़ूआत पर आप का सय्याले क़लम रवाँ दवाँ रहता है, जज़्बये दीनी का इख़्लास ही है जो तबाअती मराहिल की दुशवारियाँ भी इरादों को मुतज़लज़ल कर पाती हैं न ही सिबाते क़दमी में लरज़िश, अनक़रीब आप की ताज़ह इल्मी काविश **माँ का आँचल यअनी अज़मते वालिदैन** के नाम से नज़र नवाज़ हो रही है, जो अपने मौज़ूअ के लिहाज़ से यक़ीनन मुनफ़रिद और मअलूमात अफ़्ज़ा होगी, इस होश रुबा गिरानी दौर में जहाँ अवाम तो अवाम ख़वास भी हुसूले मआश में इतना मसरूफ़ हैं कि अयाँ राचेह बयाँ इल्ला माशाअल्लाह ऐसे में मुझ जैसे बे इल्म व बे अमल काहिल व अपाहिज को हुक्म देना कि कुछ लिखो यह उनकी ख़ुर्द नवाज़ी और अपने फ़राइज़ से आगाही व कुछ कर गुज़रने की हौसिलह अफ़्ज़ाई है।

हमेशह के लिए रहना नहीं इस दारे फ़ानी में
कुछ अच्छे काम करलो चार दिन की ज़िन्दगानी में
जो जीते हो तो इस दुनिया में कुछ काम कर जाओ
अगर कुछ हो सके तो ख़िदमते इस्लाम कर जाओ

ख़ुदाये क़दीर मौसूफ़ को जज़ाये ख़ैर दे (आमीन)

माँ के पाकीज़ह आँचल के तसकीन देह साये में परवरिश ही का नतीजह है कि आज अल्लामह मौसूफ़ गौहरे नायाब हैं और अक़लीमे शोहरत व अज़मत में एक मुनफ़रिद व मुम्ताज़ मक़ाम

रखते हैं और क्यों न अज़मत मिले कि सादिक़ व मुसदूक़ का फ़रमाने ज़ीशान है कि माँ की गोद तो पहली दरसगाह है, क़दमों तले जन्नत है, उसकी रज़ा व ख़ुशनूदी अल्लाह व रसूल जल्ला व अला सल्लल्लाहु तआल अलैहि व बारका वसल्लमा की रज़ा व ख़ुशनूदी का ज़रीअह है और उसकी नाराज़गी में ख़ुदा व रसूल की नाराज़गी है, आज ग़फ़लत का शिकार नौजवान वालिदैन के हुक़ूक़ की अदायेगी व ख़िदमात की बजा आवरी में मुजरिमानह हद तक बे एतिनाई बरत रहा है और इस हरजाई दुनिया के हसीन आँचल का मुतलाशी है यही वजह है कि रहमते यज़दानी मुतवज्जह नहीं हो रही है, ईमान की क़िवाए रंगीन ज़ेबे तन करके और अक़ीदे की पुख़्तगी का ताजे ज़र्री फ़रक़े अक़दस पर सजा के मसलके आला हज़रत के दाइरे में रहते हुए हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इबाद की अदायेगी की जाये तो आज भी कौनैन की अरजुमंदी क़ौम का मुक़द्दर बनेगी और ख़ूरशीदे इक़बाल कभी डूबेगा नहीं, ख़ालिक़े अर्ज़ो समा अपने महबूबीन के तुफ़ैल मज़ीद क़लमी ख़िदमात की तौफ़ीक़ बख़्शे और नज़रे बद से महफ़ूज़ रख्खे, इल्मी फ़ैज़ान से अवाम को माला माल फ़रमाये। (आमीन)

यही मैं ख़ुदा से दुआ माँगताहूँ
कि मुझ से मेरी माँ ख़फ़ा हो ना जाये

फ़क़ीर क़ादरी अबुल अवारिफ़ रज़ा
मुहम्मद अमीनुद्दीन ख़ान रज़वी
मक्कह मस्जिद मकरानी पाड़ह जोगेश्वरी मुम्बई
Mob.: 9967860963

मुक़द्दमह

मुख़्तसर होते हुए भी ज़िन्दगी बढ़ जायेगी
माँ की आँखें चूम लीजिए रोशनी बढ़ जायेगी

इस्लाम की आमद से पहले औरतों की कोई इज़्ज़त व तकरीम न थी चाहे वह बेटी हो या बीवी हो या माँ हो, ज़िम्मेदारियों का बोझ तो उन पर था लेकिन समाजी, मज़हबी हुक़ूक़ मयस्सर न थे सब से बड़ी बुराई यह थी कि उसे हक़्क़े

मिलकियत हासिल न था वह अपने वालिदैन या ख़ाविन्द का वारिस नहीं बन सकती थी लेकिन जब इस्लाम आया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला का फ़रमान सुनाया, औरतों के लिए भी उस माले मतरुकह से हिस्सह है जो उन के वालिदैन या क़रीबी रिश्तह दार छोड़ जायें इस्लाम से पहले औरतों की ज़िन्दगी बड़ी ख़सतह हाल हुवा करती थी ख़ासकर अरब के मआशिरह में उसे मनहूस समझा जाता था, बच्ची की पैदाइश एक हंगामए महशर बपा कर देती थी और जिस के बच्ची पैदा हो जाती वह उस से जान छुड़ाने के लिए हर उस तरीक़ह को बरूये कार लाता जिस से पत्थर का कलेजह भी शक़ हो जाये, गढ़ा खोदकर ज़िन्दह दफ़्न कर देते और इस ज़ालिमानह हरकत पर कोई भी बाज़ पुर्स न करता आक़ाये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस ज़ुल्म व सितम का ख़ातिमह फ़रमाया और बच्ची की पैदाइश को एक निअमत बना दिया उन की तरबियत, शादी, बियाह को वालिदैन के लिए नेकी क़रार दिया इरशाद फ़रमाते हैं जिस के यहाँ दो या तीन बच्चियाँ पैदा हों और उन्हें पाल पोसकर जवान करे फिर शादी कर दे तो अल्लाह तआला उस के इस अमल के सदक़े उस की बख़्शिश फ़रमा देगा। इस हदीसे पाक की रोशनी में औरतों के तअल्लुक़ से ग़लत तसव्वुरात का महल मिस्मार हो जाता है। अब आगे देखिए **बहैसियते बीवी के** अरब के मआशिरे में कोई मक़ाम न था वह घर और बाहर सिर्फ़ एक कनीज़ और ख़ादिमह थी शब व रोज़ शौहर की ख़िदमत अपने बच्चों की देखभाल इस से ज़्यादह कोई हैसियत न थी लेकिन इस्लाम ने औरत के मक़ाम को वाज़ेह कर दिया, **ऐ ईमान वालो अपनी बीवियों से अच्छा सुलूक करो**, सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद

फ़रमाते हैं कि तुम में बेहतरीन वह लोग हैं जो अपनी बीवियों से अच्छा सुलूक करते हैं और मैं अपने घर वालों से अच्छा सुलूक करता हूँ, यही वह तअलीमाते नबवी थीं जिन के ज़रीअह मियाँ बीवी के तअल्लुक़ात आहिनी क़िलअ की तरह मज़बूत हुए और एक दूसरे को भरोसह व एतमाद हासिल हुवा और आज ख़ाविन्द लाखों करोड़ों की मिलकियत बीवी के सपुर्द रखता है इस तरह इस्लाम ने बीवियों को अपने घर का मलकह बना दिया और उम्मते मुस्लिमह के घर सच्ची मुहब्बत और दयानतदारी से जगमगा उठे ।

अरब के बद्दू अपनी माओं के साथ जो सुलूक करते थे वह इन्तिहाई ज़ालिमानह होते थे, बूढ़ी मायें इन्तिहाई लाचारी व बेबसी से ज़िन्दगी गुज़ारा करती थीं और शौहर के मरने के बअद उसकी सौतेली औलाद अपनी बेवह माँ को अपने निकाह में दाख़िल करना फ़ख़्र और वराषत समझते थे गोया इस मुक़द्दस और पाक रिश्तह को हर तरह से पामाल कर दिया जाता था मगर यह एहसाने अज़ीम है मज़हबे इस्लाम का आक़ाये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि **जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है** एक दूसरी जगह इरशाद है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमअ का ख़ुतबह देने के लिए मिंबर शरीफ़ पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए जूँही अपना क़दमे नाज़ मिंबर के पहले ज़ीनह पर रख्खा तो थोड़ी देर तवक्क़ुफ़ के बअद फ़रमाया आमीन कुछ देर के बअद फिर फ़रमाया आमीन, थोड़ी देर के बअद फिर फ़रमाया आमीन बअदे नमाज़ सहाब ए किराम रज़ि यल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप ने आज एक ऐसी बात की है जो पहले

कभी नहीं किया आपने फ़रमाया जब मैंने अपना पाँव मिंबर के पहले ज़ीने पर रख्खा तो जिब्रईले अमीन तशरीफ़ लाये और हुक्मे इलाही सुनाया या रसूलल्लाह मैं दुआ करुँगा और आप आमीन कहेंगे चुनांचेह वह दुआ माँगते रहे और मैं आमीन कहता रहा उन तीनों दुआओं में से एक दुआ यह थी कि जिब्रईले अमीन ने दुआ के लिए हाथ उठा कर कहा या अल्लाह जिस को माँ बाप की ख़िदमत का मौक़ा मिला और वह उन की ख़िदमत से ग़ाफ़िल रहा उनकी ख़ुश्नूदी हासिल न की उस शख़्स पर तेरी रहमत कभी न हो चुनांचेह यही वह तअलीमात हैं कि आज माँ बाप की रज़ा जोई उनकी इज़्ज़त व तकरीम औलाद अपने लिए सआदत व निअमत समझती है।

दुनिया में जितने मज़ाहिब हैं उनका जाइज़ह लीजिए तो मअलूम होगा कि वह मुराआत, और हुक़ूक़ जो औरतों के लिए और माँ बाप के तअल्लुक़ से इस्लाम में मौजूद है किसी मज़हब और किसी समाज में नहीं, इस ख़ाकदाने गीती पर अगर बे ग़र्ज़ और बे लौस मुहब्बत करने वाली कोई ज़ात है तो वह माँ की ज़ाते बा बरकात है। जहाँ से मुहब्बत के सोते फूटते हैं और उनका आँचल रहमत व नूर का शामियानह होता है जिस के साये में बच्चों की ज़िन्दगी परवान चढ़ती है, मुस्तक़्बिल का राहे अमल तय होता है और तहज़ीव व तमद्दुन का आग़ाज़ होता है। कितने नाहंजार वह लोग हैं जिन के माँ बाप गदा गरी करते हैं ख़ुद तो ऐश व इशरत का शीश महल तअमीर करते हैं और उनके बूढ़े माँ बाप खुले आसमान तले रातैं गुज़ारते हैं कल तक जो माँ गीले बिस्तरों पर करवटैं बदलकर अपने बेटे को सीने से लगा कर लम्बी लम्बी रातैं जाग कर गुज़ार देती थी आज वही माँ आहें भरती और सिस्कियाँ लेती हुई बे यार व मददगार दिखाई

पड़ती है नौजवान नस्ल शादी के बअद अपनी बीवी बच्चों में ऐसे मगन हो जाते हैं कि पीछे पलट कर देखते भी नहीं न उन्हें माँ की गोद याद आती है और न माँ के मुक़द्दस आँचल और न बाप की शफ़क़त याद रहती है हालाँकि एक दिन वह भी किसी के बाप बनेंगे और उनकी बीवी किसी की माँ बनेगी, यह बेराह रवी, और उरयानियत, माँ बाप की नाफ़रमानियाँ इस्लामी तअलीमात से आशना न होने की वजह से है याद रक्खो ! जो क़ौम अपनी तहज़ीब अपनी शनाख़्त और अपने मज़हबी तअलीमात को भुला देती है वह ज़िल्लत व रुसवाई से हमकिनार हो जाती है।

ज़ेरे नज़र रिसालह :। **माँ का आँचल** पढ़ने के बअद आप महसूस करेंगे कि माँ बाप का मक़ाम क्या है ? और उनके तअल्लुक़ से अल्लाह व रसूल (जल्ला जलालहू, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के फ़रमूदात क्या हैं उम्मीद है कि इस किताब के मुतालअ से नौजवान नस्ल ज़रूर इस्तिफ़ादह करेगी अहले इल्म हज़रात से गुज़ारिश है कि ग़ल्तियों पर इस्लाह फ़रामाकर मेरी हौसिलह अफ़ज़ाई फ़रमायें।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े में हमारे माँ बाप की मग़फ़िरत फ़रमाये और जिन के वालिदैन ज़िन्दह हों उन्हें उनकी ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये (आमीन)

गदाये कूचये मस्ऊदे ग़ाज़ी

सिराजुल क़ादरी बहराइची

१८ सफ़रुल मुज़फ़्फ़र १४३१ हि. ३ फ़रवरी २०१० ई.

माँ

किसी को घर मिला हिस्से में या कोई दुकाँ आई
मैं घर में सब से छोटा था मेरे हिस्से में माँ आई

ऐ अंधेरे देख ले मुँह तेरा काला हो गया
माँ ने आखैं खोल दी घर में उजाला हो गया

जब भी कश्ती मेरी सैलाब में आजाती है
माँ दुआ करती हुई ख़्वाब में आजाती है

तेरे दामन में सितारे हैं तो होंगे ऐ फ़लक
मुझको अपने माँ की मैली औढ़नी अच्छी लगी

यह ऐसा क़र्ज़ है जो मैं अदा कर ही नहीं सकता
मैं जब तक घर न लौटूँ मेरी माँ सजदे में रहती है

बलंदियों का बड़े से बड़ा निशान छुवा
उठाया गोद में माँ ने तब आसमान छुवा

(मुनौवर राना)

वालिदैन के हुक़ूक़ क़ुरआन की रोशनी में

और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उसके सिवा किसी को न पूजो (यअनी किसी ग़ैरुल्लाह की इबादत न करो) और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो और अगर तेरे सामने उनमें एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उनसे हूँ न कहना। और न उन्हें झिड़कना और उनसे तअज़ीम की बात कहना और उनके लिए आजिज़ी का बाज़ू बिछाना नर्म दिली से और अर्ज़ कर की ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रहम कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छोटपन (बचपन) में पाला। (कंज़ुल ईमान प.१५,आयत३/४)

मज़कूरह बाला आयते करीमह में परवर दिगारे आलम ने वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करने का हुक्म फ़रमाया है ख़ास कर जब उन दोनों में से एक या दोनों पर बुढ़ापा आजाये और उन के आज़ा कमज़ोर हो जायें और चलने फिरने की ताक़त न रहे जैसे बचपन में तेरे अंदर ताक़त व क़ुव्वत न थी और उनके लिए ऐसा कोई कलिमह न निकालना जिसकी वजह से उनकी तबीअत को ना गवार हो और जब उनसे गुफ़्तगू करना तो हुस्ने अदब को मलहूज़ रखना आदाब व अलक़ाब से ही उन्हें ख़िताब करना और नरमी व तवाज़ो से पेश आना और उनके साथ शफ़क़त व मुहब्बत का बरताव करना उन्होंने तेरी मजबूरियों के वक़्त तुझे मुहब्बत से पाला था और जो चीज़ तुम्हें चाहिए थी उसे लाकर पेश किया था अब जो चीज़ें उन्हें दरकार हों उनके लाने में कोताही न करो और न उन पर ख़र्च करने में दरेग़ करो दुनिया में बेहतर सुलूक और ख़िदमत करने में जिस क़द्र भी मुबालिग़ह किया जाये वालिदैन के एहसान का हक़ अदा नहीं होता इस लिए बंदे को चाहिए कि बारगाहे इलाही में उन पर फ़ज़्ल व रहमत फ़रमाने की दुआ करे और अर्ज़ करे,

कि ऐ अल्लाह मेरी ख़िदमतें उनके एहसान का बदलह नहीं हो सकतीं तू उन पर करम कर ताकि उनके एहसान का

बदलह हो **मसलह**। इस आयत से साबित हुवा कि मुसलमान के लिए रहमत व मग़फ़िरत की दुआ जाइज़ है और उसे फ़ाइदह पहुँचाने वाली है, मुरदों के ईसाले सवाब में भी उनके लिए दुआए रहमत होती है लिहाज़ा इसके लिए यह आयत अस्ल है **मसलह**। वालिदैन काफ़िर हों तो उनके लिए हिदायत व ईमान की दुआ करे कि यही उनके हक़ में रहमत है हदीस शरीफ़ में है कि वालिदैन की रज़ा में अल्लाह तआला की रज़ा और उनकी नाराज़ी में अल्लाह तआला की नाराज़ी है। दूसरी हदीस शरीफ़ में है कि सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वालिदैन की नाफ़रमानी से बचो इस लिए कि जन्नत की ख़ुशबू हज़ार बरस की राह तक आती है और नाफ़रमान वह ख़ुशबू न पायेगा (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

और हम ने बनी इस्राईल से अहेद लिया कि अल्लाह के सिवा किसी को न पूजो और माँ बाप के साथ भलाई करो (कंज़ुल ईमान प.१, अलबक़रह आयत ८३)

इस आयते करीमह में अल्लाह तआला ने अपनी इबादत का हुक्म फ़रमाने के बअद माँ बाप के साथ भलाई करने का हुक्म दिया है इस से मअलूम होता है कि वालिदैन की ख़िदमत बहुत ज़रूरी है वालिदैन के साथ भलाई करने का यह मअना हैं कि ऐसी कोई बात न कहे और ऐसा कोई काम न करे जिस से उन्हें तक्लीफ़ हो और अपने बदन व माल से उनकी ख़िदमत में दरेग़ न करे जब उन्हें ज़रूरत हो उनके पास रहे **मसलह**। अगर वालिदैन अपनी ख़िदमत के लिए नवाफ़िल छोड़ने का हुक्म दें तो छोड़ दे उनकी ख़िदमत नफ़्ल से मुक़द्दम है **मसलह**। वाजिबात वालिदैन के हुक्म से तर्क नहीं किये जासकते वालिदैन के साथ एहसान के तरीक़े जो अहादीस से साबित हैं वह यह हैं कि तहे दिल से उनके साथ मुहब्बत रख्खे, रफ़्तार व गुफ़्तार में नशिस्त व बरख़ास्त में अदब लाज़िम जाने (बअदे विसाल) उनके

लिए फ़ातिहा, सदक़ात, तिलावते क़ुरआन से ईसाले सवाब करे। अल्लाह तआला से उनकी मग़फ़िरत की दुआ करे, हफ़्तहवार उनकी क़ब्र की ज़ियारत करे, वालिदैन के साथ भलाई करने में यह भी दाख़िल है कि अगर वह गुनाहों के आदी हों या किसी बद मज़हबी में गिरिफ़्तार हों तो उनको नरमी से इस्लाह व तक़्वा और अक़ीदए हक़्क़ह की तरफ़ लाने की कोशिश करता रहे, अच्छी बात से मुराद नेकियों की तरग़ीब और बदयों से रोकना है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

अल्लाह तआला वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक की इस तरह ताकीद और हुक्म फ़रमाता है। और दुनिया में उनका अच्छी तरह साथ दे (कंज़ुल ईमान सूरेह लुक़मान प.२१ आयत १४)
एक दूसरी जगह अल्लाह जल्ला मजदहू ने वालिदह की तक्लीफ़ को याद दिलाकर एहसान का हुक्म फ़रमाया, और हमने आदमी को हुक्म दिया कि अपने माँ बाप से भलाई करे उसकी माँ ने उसे पेट में रख्खा तक्लीफ़ से और जनी उसको तक्लीफ़ से और उसे उठाये फिरना और उसका धूद छुड़ाना तीस महीने में है (कंज़ुल ईमान प.२६ सूरतुलअहक़ाफ़ आयत १४)

एक और जगह अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया, और हमने आदमी को ताकीद की अपने माँ बाप के साथ भलाई की और अगर वह तुझ से कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराये जिसका तुझे इल्म नहीं तो उनका कहना न मान मेरी ही तरफ़ तुम्हारा फिरना है तो मैं बताउँगा तुझे जो तुम करते थे,।

शाने नुज़ूल : यह आयत सअद बिन मालिक जो सअद बिन अबी वक़ास के नाम से मशहूर हैं (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) उनके हक़ में नाज़िल हुई, आप साबिक़ीने अव्वलीन में से हैं अपनी वालिदह के साथ अच्छा सुलूक करते थे, जब उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया या जब हिजरत की (कज़ाफ़ित्तक्मिलह) तो उन्हें उनकी वालिदह हिमनह बिन्ते अबी सुफ़यान बिन

उमय्यह ने कहा ऐ सअद यह तूने क्या किया कि अपने आबा व अजदाद का दीन छोड़कर नया दीन इख़्तियार कर लिया। रोशनी को छोड़कर तू अंधेरे में चला गया। जब तक तू अपने नये दीन को छोड़कर अपने आबा व अजदाद के दीन में वापस नहीं आयेगा मैं न खाऊँगी न पियुँगी यहाँ तक कि मर जाऊँगी। अगर मैं मर गई तो फिर तुझे लोग पुकारेंगे **या क़ातिलु उम्मिही**। ऐ माँ के क़ातिल इसी तरह हिमनह ने अपनी क़सम पर तीन दिन गुज़ारा और ज़ुअफ़ व नक़ाहत से निहायत कमज़ोर पड़ गई। हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ऐ अम्मी अगर तेरी जान इसी तरह दुख और दर्द झेल कर निकल जाये तब भी मुझे कोई परवाह नहीं मैं अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दीन को नहीं छोड़ सकता तुम खाओ या न खाओ। जब हिमनह ने देखा कि हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने क़ौल में पुख़्तह और मज़बूत है तो खाना पीना शुरूअ कर दिया। हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह तआला ने ख़ुसूसन और बाक़ी जुमलह अहले इस्लाम को ताकीद फ़रमाई कि माँ बाप के साथ एहसान व मुरव्वत करो और उनकी ख़िदमात में कोताही न करो और शिर्क और नाफ़रमानी ख़िलाफ़े शरअ के सिवा बाक़ी जिन उमूर में वह राज़ी हों उन्हें राज़ी करें। हाँ जब वह शिर्क या हुक्मे शरअ के ख़िलाफ़ फ़रमायें तो उनका कहना न मानें। (तफ़्सीरे रूहुल बयान)

हुक़ूक़े वालिदैन अहादीस की रोशनी में

हदीस :(१) हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार फ़रमाया ख़ाक आलूद हो उसकी नाक, फिर ख़ाक आलूद हो उसकी नाक, फिर ख़ाक आलूद हो उसकी नाक सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन ने अर्ज़ की या

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसकी नाक ख़ाक आलूद हो ? फ़रमाया उसकी जिसने माँ बाप या उन दोनों में से एक पाया को फिर जन्नती न हुआ, यअनी उनकी ख़िदमत न की, न किसी और तरह उनकी ख़ुशनूदी हासिल की जिसके सबब वह जन्नत का मुस्तहक़ होता। (मिशकात शरीफ़ स.४१८)

हदीस :(२) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कबीरह गुनाहों में से एक यह भी है कि कोई शख़्स अपने वालिदैन को गाली दे सहाबह ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोई अपने माँ बाप को भी गाली देता है ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमााया हाँ ! जबकि वह शख़्स किसी दूसरे के माँ बाप को गाली दे और जवाव में वह उसके माँ बाप को गाली दे तो गोया उसने ख़ुद ही अपने माँ बाप को गाली दी। (मिशकात शरीफ़ स. ४१९)

हदीस :(३) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन दुआयें ऐसी हैं जिनके क़ुबूल होने में कोई शक नहीं (१) मज़लूम की दुआ (२) मुसाफ़िर की दुआ (३) और बाप की अपने बेटे पर बद्दुआ ।

औलाद को चाहिए कि हमेशह अपने माँ बाप की बद्दुआ से बचने की कोशिश करता रहे। (तिर्मिज़ी जि.२ स.१३)

हदीस :(४) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो भी फ़रमाँबरदार बेटा अपने माँ बाप को एक बार मुहब्बत और रहम की निगाह से देखे तो अल्लाह तआला उसके बदले एक हज्जे मक़बूल लिखेगा तो लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चाहे रोज़ानह सौ बार देखे फ़रमाया हाँ ! अल्लाह बहुत बड़ा और बहुत तैयब है ।
(मिशकात शरीफ़ स.४२१)

हदीस :(५) हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि आक़ाये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स आया और उसने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझ से एक बड़ा गुनाह होगया है क्या मेरी तौबह क़ुबूल हो सकती है ? आप ने फ़रमाया ! क्या तेरी माँ ज़िन्दह है ? उसने अर्ज़ किया नहीं, फिर फ़रमाया कि तेरी ख़ालह ज़िन्दह है अर्ज़ किया हाँ फ़रमाया तू उसके साथ हुस्ने सुलूक कर। (मिशकात शरीफ़ स.४२०)

इस हदीस शरीफ़ से मअलूम हुवा कि माँ या ख़ालह के साथ हुस्ने सुलूक करने की वजह से बहुत से गुनाह मआफ़ हो जाते हैं उसकी बरकत से अल्लाह करीम नेकियों की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है।

हदीस :(६) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स चाहे कि परवरदिगारे आलम उसकी उम्र में बरकत अता फ़रमाये और उसका रिज़्क़ बढ़ा दे तो उसको चाहिए कि अपने माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करे और अपने रिश्तह दारों से तअल्लुक़ात बनाये रख्खे। (दुर्रे मन्सूर जि.४ स.१७३)

माँ बाप में किसका हक़ ज़्यादह है

इस तअल्लुक़ से इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, औलाद पर बाप का हक़ निहायत अज़ीम है और माँ का हक़ उस से आज़म है।

अल्लाह तआला सूरेह अहक़ाफ़ में फ़रमाता है, और हमने ताकीद की आदमी को अपने माँ बाप के साथ नेक बरताव की उसे पेट में रख्खी उसकी माँ ने तक्लीफ़ से और उसे जना तक्लीफ़ से और उसका पेट में रहना और धूद छुटना तीस महीने में है। इस आयते करीमह में अल्लाह तआला ने माँ बाप दोनों के

हक़ में ताकीद फ़रमाकर माँ को फिर ख़ास अलग करके गिना और उसकी उन सख़्तियों और तक्लीफ़ों को जो उसे हमल व विलादत और दो बरस तक अपने ख़ून का इत्र (धूद) पिलाने में पेश आईं जिनके बाइस उसका हक़ अशद व आज़म हो गया शुमार फ़रमाया।

दूसरी जगह सूरेह लुक़मान में है, ताकीद की हमने आदमी को उसके माँ बाप के हक़ में पेट में रख्खा उसे उसकी माँ ने सख़्ती पर सख़्ती उठाकर धूद छुटना दो बरस में है यह कि हक़ मान मेरा और अपने माँ बाप का।

हदीस : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशह सिद्दीक़ह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने आक़ाये करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम औरत पर सबसे बड़ा हक़ किसका है फ़रमाया ! शौहर का मैंने अर्ज़ की और मर्द पर सबसे बड़ा हक़ किसका है फ़रमाया उसकी माँ का (बसनदे हसन वल हाकिम)

हदीस : एक शख़्स ने हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब से ज़्यादह कौन इसका मुसतहक़ है कि मैं उसके साथ नेक रिफ़ाक़त करूँ ? फ़रमाया तेरी माँ अर्ज़ की फिर, फ़रमाया तेरी माँ अर्ज़ की फिर, फ़रमाया तेरा बाप (बुख़ारी व मुस्लिम)

हदीस : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं मैं आदमी को वसिय्यत करता हूँ उसकी माँ के हक़ में, वसिय्यत करता हूँ उसकी माँ के हक़ में, वसिय्यत करता हूँ उसके बाप के हक़ में ।

बाप से माँ का हक़ ज़्यादह होने का मतलब

मगर उस से ज़्यादत के यह मअना हैं कि ख़िदमत में या देने में बाप पर माँ को तरजीह दे मसलन सौ रूपये हैं और कोई

ख़ास वजह मानए तफ़ज़ीले मादर नहीं (माँ को ज़्यादह देने में कोई ख़ास रुकावट न हो) तो बाप को २५/ दे माँ को ७५/ या माँ बाप दोनों ने एक साथ पानी माँगा तो पहले माँ को पिलाये फिर बाप को या दोनों सफ़र से आये हैं तो पहले माँ की ख़िदमत करे फिर बाप की **वअला हाज़ल क़यास**, न यह कि अगर वालिदैन में बाहम तनाज़अ (आपस में लड़ाई झगड़ा) हो तो माँ का साथ देकर मआज़अल्लाह बाप के दर पए ईज़ा हो, या उस पर किसी तरह दुरुश्ती (बद ख़ुलक़ी) करे या उसे जवाव दे या वे अदबानह आँख मिलाकर बात करे, यह सव वातें हराम हैं, और अल्लाह अज़्ज़ा वजल की मअसिअत (नाफ़रमानी) में न माँ की इताअत है न बाप की तो उसे माँ बाप में से किसी एक का साथ देना हरगिज़ जाइज़ नहीं वह दोनों उसकी जन्नत और नार हैं जिसे तक्लीफ़ देगा दोज़ख़ का मुस्तहक़ होगा वलअयाज़ो बिल्लाह (फ़तावा रज़्वियह जि.९ स.५९)

माँ बाप की रज़ा में अल्लाह तआला की रज़ा है

जो लड़का अपने माँ बाप को सताये वह फ़ासिक़ व-फ़ाजिर गुनाहे कबीरह का मुरतकिब और आक़ (सरकश) व नाफ़रमान और अल्लाह तआला का नाफ़रमान और उसके अज़ाब व ग़ज़ब का मुस्तहक़ है, बाप की नाफ़रमानी अल्लाह क़ह्हार व जब्बार की नाफ़रमानी है और बाप की नाराज़ी अल्लाह क़ह्हार व जब्बार की नाराज़ी है, आदमी माँ बाप को राज़ी करे तो वह उसके लिए जन्नत हैं और अगर नाराज़ करे तो वह उसके लिए दोज़ख़ हैं जब तक माँ बाप को राज़ी न करेगा उसका कोई फ़र्ज़, कोई नफ़्ल, कोई अमले नेक बिल्कुल क़ुबूल न होंगे आख़िरत के अज़ाब के इलावह दुनिया ही में जीते जी सख़्त बला नाज़िल होगी मरते वक़्त मआज़ अल्लाह कलिमह नसीब न होने का ख़ौफ़ है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं माँ बाप तेरी जन्नत और तेरी दोज़ख़ हैं।

एक हदीस शरीफ़ में यूँ आया है कि सब गुनाहो की

सज़ा अल्लाह तआला चाहे तो क़यामत के लिए उठा रखता है मगर माँ बाप की नाफ़रमानी की सज़ा जीते जी पहुँचा देता है।
(हाकिम,तिबरानी)

सौतेली माँ का हक़ व हुरमत

सौतेली माँ एक अज़ीम व ख़ास तअल्लुक़ उसके बाप से रखती है जिसकी वजह से तअज़ीम व हुरमत उसपर बिला शुब्हा लाज़िम है। इस हुरमत के बाइस अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उसे हक़ीक़ी माँ के मिस्ल हरामे अबदी किया।

हदीस : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं बेशक सब नेकोकारियों से बढ़कर नेको कारी यह है कि बेटा अपने बाप के दोस्तों से अच्छा सुलूक करे (मुस्लिम) जब बाप के दोस्तों की निसबत यह अहकाम हैं तो उसकी मनकूहा, उसकी नामूस की तअज़ीम क्याों न हक़ वअकद होगी, ख़ुसूसन जबकि उसकी नाराज़गी में बाप की नाराज़ी हो कि, बाप की नाराज़ी अल्लाह की नाराज़ी है (फ़तावा रज़्वियह जि.९ स.५८)

हुक़ूक़े वालिदैन बअदे इन्तिक़ाल

(१) सब से पहला हक़ बअदे मौत उनके जनाज़े की तजहीज़, ग़ुस्ल व कफ़्न व नमाज़ व दफ़्न है और इन कामों में सुनन व मुस्तहिब्बात की रिआयत, जिस से उनके लिए हर ख़ूबी व बरकत व रहमत व वुसअत की उम्मीद हो।

(२) उनके लिए दुआ व अस्तग़फ़ार हमेशह करते रहना, इस से कभी ग़फ़लत न करना।

(३) सदक़ह व ख़ैरात व आमाले सालिहात का सवाब उन्हें पहुँचाते रहना,हस्बे ताक़त उसमें कमी न करना, अपनी नमाज़ के साथ उनके लिए भी नमाज़ पढ़ना, अपने रोज़ों के साथ उनके वास्ते भी रोज़े रखना, बल्कि जो नेक काम करे सब का सवाब उन्हें और सब मुसलमानों को बख़्श देना कि उनको सवाब पहुँच

जायेगा और उसके सवाब में कमी न होगी बल्कि बहुत तरक़्क़ियाँ पायेगा।

(४) उनपर कोई क़र्ज़ किसी का हो तो उसके अदा करने में हद दरजह की जल्दी व कोशिश करना और अपने माल से उनके क़र्ज़ अदा होने को दोनों जहाँ की सआदत समझना आप क़ुदरत न हो तो और अज़ीज़ों, क़रीबों फिर बाक़ी अहले ख़ैर से उसकी अदा में इमदाद लेना।

(५) हर जुमअ को उनकी ज़्यारते क़ब्र के लिए जाना, वहाँ सूरेह यासीन शरीफ़ ऐसी आवाज़ से कि वह सुनें पढ़ना, और उसका सवाब उनकी रूह को पहुँचाना, राह में जब कभी उनकी क़ब्र आये बे सलाम व फ़ातिहा न गुज़रना।

(६) उनके रिश्तहदारों के साथ उम्र भर नेक सुलूक किये जाना।

(७) उनके दोस्तों से दोस्ती निबाहना, हमेशह उनका एज़ाज़ व इकराम रखना।

(८) कभी किसी के माँ बाप को बुरा कह कर उन्हें बुरा न कहेलवाना।

अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम , अज़ीज़ करीम जल्ला जलालहू सदक़ह अपने हबीब व रहीम अलैहि व अला आलिही अफ़्ज़लुस सलाते वत्तसलीम का हम मुसलमानों को नेकियों की तौफ़ीक़ दे। गुनाहों से बचाये, हमारे अकाबिर की क़बरों में हमेशह नूर व सुरुर पहुँचाये कि वह क़ादिर और हम आजिज़, वह ग़नी है हम मुहताज हैं।

हदीस : एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हाज़िर होकर अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं अपने माँ बाप के साथ ज़िन्दगी में नेक सुलूक व रता था अब वह मर गए उनके साथ नेक सुलूक की क्या राह है ? फ़रमाया

बअदे मौत नेक सुलूक यह है कि तू अपनी नमाज़ के साथ उनके लिए भी नमाज़ पढ़े और अपन रोज़ों के साथ उनके

लिए रोज़ह रख्खे (रवाहु दारे क़ुतनी) यअनी जब तू अपने सवाब के लिए कुछ नफ़्ल पढ़े या रोज़े रख्खे तो कुछ नफ़्ल नमाज़ उनकी तरफ़ से, कि उन्हें सवाब पहुँचाये। या नमाज़ रोज़ह जो नेक अमल करे साथ ही उन्हें सवाब पहुँचने की भी निय्यत करे कि उन्हें भी सवाब मिलेगा और तेरा भी कम न होगा।

हदीस : अमीरुलमोमिनीन उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु पर अस्सी हज़ार क़र्ज़ थे वक़्ते वफ़ात अपने साहिबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुलाकर फ़रमाया मेरे दैन (क़र्ज़) में अव्वल तो मेरा माल बेचना अगर काफ़ी हो जाये **फ़बिहा** (बहुत अच्छा) वरनह मेरी क़ौम बनी अदी से माँग कर पूरा करना अगर यूँ भी पूरा न हो तो क़ुरेश से माँगना और उनके सिवा औरों से सवाल न करना,

फिर साहिबज़ादए मौसूफ़ से फ़रमाया तुम मेरे क़र्ज़ की ज़मानत करलो, वह ज़ामिन हो गए और अमीरुल मोमिनीन के दफ़्न से पहले अकाबिरे मुहाजिरीन व अनसार को गवाह कर लिया कि वह अस्सी हज़ार मुझ पर हैं, एक हफ़्तह न गुज़रा था कि अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वह सारा क़र्ज़ अदा फ़रमा दिया (तबक़ाते इब्ने सअद अज़ उसमान बिन उरवह)

हदीस : क़बीलए जुहनियह से एक बीबी रज़ियल्लाहु अन्हा ने ख़िदमते अक़दस हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में हाज़िर होकर अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी माँ ने हज करने की मन्नत मानी थी वह अदा न कर सकीं और उनका इन्तिक़ाल हो गया क्या उनकी तरफ़ से हज कर लूँ ? फ़रमाया

हाँ उसकी तरफ़ से हज करो भला तू देख तो तेरी माँ पर अगर दैन (क़र्ज़) होता तो अदा करती या नहीं, यूँ ही ख़ुदा का दैन (क़र्ज़) अदा करो

कि वह ज़्यादह हक़ रखता है

(रवाहुल बुख़ारी अन इब्ने अनस रज़ियल्लाहु अन्हु)

हदीस : सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जो अपने माँ बाप दोनों या एक की क़ब्र पर हर जुमअ के दिन ज़्यारत को हाज़िर हो अल्लाह तआला उसके गुनाह बख़्श देगा और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करने वाला लिखा जायेगा (रवाहुल हकीम अत्तिर्मिज़ी फ़िन्नावादिर अन अबी हुरैरह)

हदीस : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जो शख़्स रोज़े जुमअ अपने वालिदैन या एक की ज़्यारते क़ब्र करे और उसके पास यासीन पढ़े बख़्श दिया जाये (इब्ने अदी अनिस्सिद्दीक़िल अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु)

औलाद के लिए वालिद की शरई ज़िम्मेदारियाँ

(१) दीनदार लोगों में शादी करे ताकि बच्चह पर नाना व मामूँ की आदत व अफ़आल का भी असर पड़े।

(२) जिमाअ की इब्तिदा बिस्मिल्लाह से करे वरनह बच्चह में शैतान शरीक हो जाता है।

(३) बवक़्ते जिमाअ औरत की शरमगाह पर नज़र न करे कि बच्चह के अन्धे होने का अन्देशह है।

(४) बवक़्ते जिमाअ ज़्यादह बातें न करे कि गूँगे या तूतले होने का ख़तरह है।

(५) मियाँ बीवी कपड़ा ओढ़ लें जानवरों की तरह नंगे होकर जिमाअ करने से बच्चे के बेहया होने का ख़दशह है।

(६) जब बच्चह पैदा हो फ़ौरन सीधे कान में अज़ान, बायें में तकबीर कहे कि ख़लले शैतान व उम्मुस्सिबयान (मिरगी) से बचे।

(७) छुहारा वग़ैरह कोई मीठी चीज़ चबाकर उसके मुँह में डाले कि हलावते अख़्लाक़ की फ़ाले हसन है।

(८) सातवीं और न हो सके तो चौदहवीं वरनह इक्कीसवें दिन अक़ीक़ह करे लड़की के लिए एक लड़के के लिए दो बकरे, कि उसमें बच्चह को गोया रहन से छुड़ाना है।

(९) एक रान दाई को दे कि बच्चह की तरफ़ से शुकरानह है।
(१०) सर के बाल उतरवाये और बालों के बराबर चाँदी तौल कर ख़ैरात करे।
(११) सर पर ज़अफ़रान लगाये।
(१२) नाम रख्खे यहाँ तक कि कच्चे बच्चे का जो कम दिनों का गिर जाये वरनह वह बच्चह अल्लाह के यहाँ शाकी होगा
(१३) बुरा नाम न रख्खे कि बुरा नाम फ़ाले बद है।
(१४) अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, अहमद, हामिद वग़ैरहा इबादत व हम्द, या अंबिया, औलिया या अपने बुज़ुरगों में जो नेक लोग गुज़रे हों उनके नाम पर नाम रख्खे कि मूजिबे बरकत है ख़ुसूसन नामे पाके मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस मुबारक नाम की बेपायाँ बरकत बच्चह के दुनिया व आख़िरत में काम आती है।
(१५) जब मुहम्मद नाम रख्खे तो उसकी तअज़ीम करे, मजलिस में उसके लिए जगह छोड़ दे, मारने बुरा कहने में एहतियात रख्खे जो माँगे बर वज्हे मुनासिब दे ।
(१६) प्यार में छोटे लक़ब बे क़दर नाम न रख्खे कि पड़ा हुवा नाम मुश्किल से छूटता है।
(१७) माँ या नेक दायह नमाज़ी सालिहा शरीफ़ुल क़ौम से दो साल तक दूध पिलवाये।
(१८) बच्चह को पाक कमाई से पाक रोज़ी दे कि नापाक माल नापाक ही आदतें लाता है।
(१९) उन्हें प्यार करे बदन से लिपटाये, कन्धे पर चढ़ाये, उनके हँसने खेलने, बहेलने की बातें करे।
(२०) नया मेवह, नया फल उन्हें दे कि वह भी ताज़े फल हैं नये को नया मुनासिब है।
(२१) बहलाने को झूटा वअदह न करे बल्कि बच्चह से भी वअदह वही जाइज़ है जिसको पूरा करने का इरादह रखता हो।

(२२) अपने चंद बच्चे हों तो जो चीज़ दे सब को बराबर दे एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत व तरजीह न दे।
(२३)सफ़र से आये तो उनके लिए कोई तोहफ़ह ज़रूर लाये।
(२४) बीमार हों तो इलाज कराये।
(२५) ज़बान खुलते ही अल्लाह अल्लाह फिर कलिमह ला इलाहा इल्लल्लाह फिर पूरा कलिमह सिखाये।
(२६) जब तमीज़ आये अदब सिखाये, खाने,पीने, हँसने, बोलने, उठने,बैठने, चलने, फिरने, हया, लिहाज़,बुज़ुरगों की तअज़ीम, माँ बाप उस्ताज़ और लड़की को शौहर के भी इताअत के तरीक़े व आदाब बताये।
(२७) दीनी तअलीम सिखाये क़ुरआन मजीद पढ़ाये और बअदे ख़तमे क़ुरआन मजीद हमेशह तिलावत की ताकीद रख्खे।
(२८) अक़ाइदे इस्लाम व सुन्नत सिखाये कि बचपन का सिखाया हुवा पत्थर की लकीर होगा।
(२९) हुज़ूरे अक़दस रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत व तअज़ीम उनके दिल में डाले कि अस्ल ईमान व ऐने ईमान यही है।
(३०) सात बरस की उम्र से नमाज़ सिखाये और नमाज़ की ज़बानी तकीद शुरूअ कर दे और जब दस बरस का हो नमाज़ मारकर पढ़ाये।
(३१) दस बरस की उम्र हो जाये तो ख़्वाह अपने या किसी के साथ न सुलाये उनके लिए अलग बिस्तर अलग चारपाई का इन्तिज़ाम कर दे।
(३२) जब जवान हो जाये तो शादी कर दे शादी में वही रिआयत क़ौम व दीन व सूरत व सीरत मलहूज़ रख्खे।

लड़कियों के लिए खुसूसी हुक़ूक़

(१) लड़कियों के पैदा होने पर नाख़ुशी न करे बल्कि निअमते इलाहियह जाने (२) उसे सीना, परोना, कातना, खाना पकाना सिखाये (३) सूरेह नूर की तअलीम दे (कंज़ुल ईमान का

तरजुमह और तफ़्सीर पढ़ कर सुनाये या उन्हें पढ़ने की ताकीद करे) (४) बेटों से ज़्यादह उनकी दिलजोई व ख़ातिर दारी रक्खे कि उनका दिल बहुत थोड़ा होता है (५) देने में (उन्हें और बेटों को) काँटे की तौल बराबर रक्खे ऐसा न हो कि लड़कों को ज़्यादह दे और लड़कियों को कम दे (६) अगर कोई चीज़ लाये तो पहले लड़कियों को दे और बअद में बेटों को दे (७) नौ बरस की उम्र से न अपने पास सुलाये न भाई वग़ैरह के पास सोने दे और इस उम्र से ख़ास निगरानी शुरूअ करदे (८) शादी बरात में जहाँ गाना नाच हो हरगिज़ न जाने दे अगरचेह ख़ास अपने भाई के यहाँ हो कि गाना बजाना सख़्त जादू है और इन शीशों को थोड़ी ठेस वहुत है बल्कि हंगामों (मेला वग़ैरह) में जाने की मुतलक़ बन्दिश करे (९) घर को उनपर ज़न्दान (क़ैदख़ानह) करदे बाला ख़ानों (छतों) पर न रहने दे यअनी सख़्ती के साथ परदे का एहतिमाम करे (१०) घर में लिबास व ज़ेवर से आरास्तह करे कि पयाम रग़बत (निकाह का पैग़ाम) के साथ आये (११) जब कुफ़ू (बिरादरी,बराबरी का रिश्तह) मिल जाये निकाह में देर न करे (१२) हत्तल इमकान बारह बरस की उम्र में ब्याह दे (१३) ज़िनहार ज़िनहार (हरगिज़ हरगिज़ किसी फ़ासिक़ फ़ाजिर ख़ुसूसन बद मज़हब (वहाबी, देवबंदी मौदूदी, तबलीग़ी,सुलह कुल्ली, राफ़ज़ी वग़ैरह) के निकाह में न दे

(फ़तावा रज़्वियह शरीफ़ जि.९ स.४६/४७)

माँ बाप की नाफ़रमानी का वबाल

हिकायत : इमाम इब्नुल जोज़ी मुहद्दिस, किताब **ऐनुल हिकायात** में बसनदे ख़ुद मुहम्मद इब्नुल अब्बास वर्राक़ से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स अपने बेटे के साथ सफ़र को गया, राह में बाप का इन्तिक़ाल होगया वह जंगल दरख़्ताने मुक़ुल यअनी गोगुल के पेड़ों का था, उनके नीचे दफ़्न करके बेटा जहाँ जाता था चला गया, जब पलटकर आया तो उस मंज़िल में रात को पहुँचा और बाप की क़ब्र पर न गया, नागाह

(अचानक) सुना कि कोई कहने वाला कहता है मैंने तुझे देखा कि तू रात में इस जंगल से गुज़र रहा है और वह जो उन पेड़ों में है (तेरा बाप) उस से कलाम करना अपने ऊपर लाज़िम नहीं जानता हालाँकि उन दरख़्तों में वह मुक़ीम है कि अगर उसकी जगह तू होता और वह यहाँ से गुज़रता तो राह से फिर कर आता और तेरी क़ब्र पर सलाम करता।

हदीस : एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने हाज़िर होकर अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक राह में ऐसे गरम पत्थरों पर कि गोश्त उनपर डाला जाता तो कबाब हो जाता, मैं छे मील तक अपनी माँ को अपनी गरदन पर सवार करके ले गया हूँ, क्या मैं अब उसके हक़ से अदा हो गया ? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तेरे पैदा होने में जिस क़द्र दरदों के झटके उसने उठाये हैं शायद उनमें से एक झटके का बदलह हो सके (अत्तिबरानी फ़िल औसत)

हदीस : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया वालिद जन्नत के सब दरवाज़ों में बीच का दरवाज़ह है तू चाहे इस दरवाज़े को अपने हाथ से खो दे ख़्वाह निगाह रख (यअनी हिफ़ाज़त कर) (अत्तिर्मिज़ी)

हदीस : फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब गुनाहों की सज़ा अल्लाह तआला चाहे तो क़यामत के लिए उठा रखता है मगर माँ बाप की नाफ़रमानी की उसके जीते जी सज़ा पहुँचाता है (अलहाकिम)

हिकायत : हज़रत अवाम बिन हौशब रहमतुल्लाह अलैहि जो कि अजल्ले अइम्मए तबअे ताबईन से हैं १४८हि. में इन्तिक़ाल किया, फ़रमाया मैं एक मुहल्लह में गया उसके किनारह पर क़बरिस्तान था अस्र के वक़्त एक क़ब्र शक़ हुई और उसमें एक आदमी निकला जिसका सर गधे का और बाक़ी बदन इन्सान का, उसने तीन आवाज़ें गधे की तरह कीं फिर क़ब्र बंद हो गई एक बुढ़िया बैठी सूत कात रही थी, एक औरत ने मुझ से कहा उन बड़ी बी को देखते हो मैंने कहा उसका क्या

मआमिलह है ? कहा यह उस क़ब्र वाले की माँ है, वह शराब पीता था जब शाम को आता माँ नसीहत करती की ऐ बेटे ख़ुदा से डर, कब तक इस नापाक को पियेगा, यह जवाब देता कि तू तो गधे की तरह चिल्लाती है यह शख़्स अस्र के बअद मरा जब से हर रोज़ बअदे अस्र उसकी क़ब्र शक़ होती है रोज़ यूँ ही तीन आवाज़ें गधे की हो करके बंद हो जाती है। (रवाहुल अस्बहानी वग़ैरह) इसी वाक़िअह को हज़रत अता बिन यसार रहमतुल्लाह अलैहि इस तरह बयान करते हैं कि बअज़ लोग सफ़र को गए जंगल में एक झोपड़े में क़याम किया। रात को झोपड़े में गधे की ढिचूँ ढिचूँ की आवाज़ सुनते रहे। यहाँ तक कि सुबह हुई उन्होंने झोपड़े वाली बीबी से पूछा कि तुम्हारे यहाँ गधा तो है नहीं लेकिन हम ढिचूँ ढिचूँ की आवाज़ सुनते रहे इसकी वजह क्या है ? बुढ़िया ने कहा : यह मेरा लड़का ढिचूँ ढिचूँ करता है। इस लिए कि एक दिन उसने मुझे गधी कहा। मैंने अल्लाह तआला से बद्दुआ की कि उसे गधा बना दिया जाये। फिर जब से वह मरा है उस वक़्त से उसकी क़ब्र से हर रात ऐसे ही गधे की सी आवाज़ सुनाई देती है और सुबह तक ऐसे ही आवाज़ आती रहती है।

ख़िदमते वालिदैन का सिलह

हज़रत ओस यमनी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स के चार लड़के थे जब उनका बाप बीमार हुवा तो उनमें से एक भाई ने दूसरों से कहा या तो तुम सब मिलकर बाप की तीमार दारी (ख़िदमत) करो मगर इस शर्त पर कि बाप की मीरास से कुछ न लुँगा। या मैं उनकी तीमार दारी करता हूँ और इसी शर्त पर कि इस मीरास से कुछ न लुँगा। यह सुनकर भाइयों ने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया कि अच्छा बस तुम ही इनकी तीमार दारी करो। चुनांचह उसने अपने वालिदैन की तीमार दारी शुरूअ करदी, एक दिन ख़्वाब में क्या देखता है कि कोई शख़्स उस से कह रहा है कि तुम फ़लाँ मक़ाम पर जाकर

एक सौ अशरफ़ियाँ ले लो मगर उनमें बरकत नहीं है। सुबह उठकर उसने अपनी बीवी से तज़किरह किया तो वह कहने लगी वह अशरफ़ियाँ ले आओ मगर उस अक़्ल मंद ने उसके लेने से इन्कार कर दिया कि जब बरकत ही उनमें नहीं है तो लेकर क्या करूँ। इसी तरह फिर दूसरी रात को उसके ख़्वाब में नज़र आया कि फ़लाँ मक़ाम से दस अशरफ़ियाँ लेलो मगर बरकत उनमें भी नहीं है। फिर जब सुबह को उसने बीवी से उसका ज़िक्र किया तो फिर उसने अशरफ़ियाँ लेने की रग़बत दिलाई मगर उस मरदे दाना ने बे बरकत चीज़ को लेना क़ुबूल न किया तो फिर तीसरी रात उस से कहा गया कि अच्छा फ़लाँ मक़ाम पर जाओ और वहाँ से एक अशरफ़ी लेलो उसमें अलबत्तह बरकत है बस यह सुनकर वह शख़्स वहाँ गया और एक अशरफ़ी ले आया वहाँ से वापसी पर उसने देखा कि एक शख़्स दो मछलियाँ फ़रोख़्त कर रहा है उस शख़्स ने दरयाफ़्त किया कि दोनों मछलियाँ किस क़ीमत पर दोगे मछली वाले ने जवाब दिया एक अशरफ़ी इनकी क़ीमत है चुनाँचह उस शख़्स ने वह अशरफ़ी देकर दोनों मछलियाँ ख़रीद ली और जब उनको लेकर घर आया और मछलियों का पेट चाक किया तो उनके पेट से दुरे बेबहा निकल आया जिनमें एक मोती लेकर वह बादशाहे वक़्त की ख़िदमत में हाज़िर हुवा, जो बादशाह को बहुत पसंद आया और उसके बदले बादशाह ने उस शख़्स को एक कसीर रक़म अता करदी नीज़ उस से कहा अगर तुम इसका जोड़ मिला दो तो मैं तुम को बेशुमार दौलत अता करूँगा यह सुनकर उस शख़्स ने वह दूसरा मोती भी बादशाह को पेश कर दिया जिसके इवज़ बादशाह ने अपने वअदह के मुताबिक़ उस शख़्स को कसीर रक़म अता कर दी जिसको लेकर वह घर चला आया और अपनी वालिदैन की ख़िदमत की बदौलत सब भाइयों से ज़्यादह मालदार हो गया। (क़लयूबी)

फाइदह : ख़िदमते वालिदैन के सिले में अल्लाह तआला ने उसको दौलत से नवाज़ा। ख़िदमते वालिदैन हक़ीक़त में बड़ी चीज़ है।

हिकायत : एक वलीए कामिल का बयान है कि मैंने बसरह के बाज़ार में एक जनाज़ह देखा जिसे सिर्फ़ चार आदमी उठाकर दफ़नाने जा रहे थे उनके साथ और कोई न था। मैंने कहा अजीब बात है बसरह के भरे बाज़ार में मुसलमान के जनाज़ह के साथ कोई भी नहीं। मैं जनाज़ह के साथ हो लिया, उसकी नमाज़ पढ़ाई और दफ़नाने में शरीक रहा। उन चारों आदमियों से उसके मुतअल्लिक़ पूछा तो कहा हम कुछ नहीं जानते हमें तो यह औरत किरायह पर ले आई है जो क़ब्र के सिरहाने खड़ी है। जब वह चारों आदमी चले गए तो वह औरत हाथ उठाकर देर तक वहाँ दुआ माँगती रही, फ़राग़त पर हंसी, जब वह जाने लगी तो मैंने पूछा : बीबी! मुझे इस राज़ से आगाह फ़रमाइए। फ़रमाया : यह मुरदह मेरा बेटा है, उसने ज़िन्दगी में कोई गुनाह न छोड़ा आज से तीन रोज़ पहले यह बीमार हुवा और मुझे कहा : अम्मी! जब मैं मर जाऊँ तो पड़सियों को मेरी मौत की ख़बर तक न देना, वह मेरी मौत से ख़ुश होंगे और मेरे जनाज़ह के लिए भी नहीं आयेंगे लेकिन तुम ऐसे करना कि मेरी अंगूठी पर लाइलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह लिखवाकर मेरी उंगली में पहना देना और मरने के बअद अपना पाँव मेरे चेहरे पर रखकर कहना यह है सज़ा उसकी जो ख़ुदा का नाफ़रमान हो, जब तुम मुझे दफ़ना चुको तो हाथ उठाकर दुआ माँगना कि या इलाही मैं अपने बेटे से राज़ी हूँ तू भी उस से राज़ी होजा। अब मैंने उसकी तमाम वसिय्यतें पूरी करदी हैं और अब जैसा कि आप ने देखा है मैंने हाथ उठाकर दुआ माँगी है तो मैंने क़ब्र के अन्दर से बेटे की आवाज़ सुनी वह फ़सीह अलफ़ाज़ में कह रहा था : अम्मीजान! तशरीफ़ ले जाइए मैं अपने रब के यहाँ हाज़िर हुवा तो उसे रहीम व करीम पाया वह मुझ से राज़ी है। मैंने जब उसकी यह बात सुनी तो मैं हंस पड़ी उसके हाल के सुरूर से। (शरहुल अस्माउल इमामुल क़शीरी रहमतुल्लाह तआला)

माँ बाप की ख़ुशनूदी का इनआम याफ़्तह शख़्स

मनक़ूल है कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने बज़रीअह वही फ़रमाया कि दरिया के साहिल पर जाकर एक अजीब मंज़र मुलाहिज़ह फ़रमाइए। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने अपने जिन्न व इन्स के लशकर समेत दरिया के साहिल पर पहुँच गए लेकिन कोई शय नज़र न आई आप ने एक जिन्न से फ़रमाया दरिया में ग़ोतह लगाइए जो नई शय मिले मेरे यहाँ लाइए जिन्न ने ग़ोतह लगाया लेकिन कोई शय न मिली दूसरे को फ़रमाया तो दूसरा भी ख़ाली हाथ लौटा। फिर आप ने अपने वज़ीर हज़रत आसिफ़ बिन बरख़िया जिनका ज़िक्र क़ुरआन मजीद में आया है, उनको हुक्म दिया तो उन्होंने ग़ोतह लगाकर एक काफ़ूरी क़ब्र दरिया से निकाल कर पेश किया। उस सफ़ेद काफ़ूरी क़ुब्बह के चार दरवाज़े थे एक सफ़ेद मोतियों का दूसरा जवाहर ख़ालिस का तीसरा सब्ज़ ज़बरजद का चौथा सुर्ख़ या क़ूत का बावजूद यह कि चारों दरवाज़े खुले हुए थे लेकिन पानी का एक क़तरह भी उस क़ुब्बे में नहीं जा सकता था और वह क़ुब्बह दरिया की बहुत बड़ी गहराई में इतना पोशीदह था कि तीन बार ग़ोते की मसाफ़त तय करने के बअद मयस्सर आया। हज़रत आसिफ़ बिन बरख़िया ने वह क़ुब्बह हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के सामने रख्खा तो देखा गया कि उस क़ुब्बे के दरमियान में एक नौजवान निहायत बेहतरीन लिबास से मलबूस खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहा है। सुलेमान अलैहिस्सलाम उस क़ुब्बे के अन्दर तशरीफ़ ले गए और उस नौजवान को अस्सलामु अलैकुम फ़रमाकर पूछा कि इस शान व क़द्र तक कैसे पहुँचे, उसने अर्ज़ की ऐ अल्लाह के नबी अलैहिस्सलाम मेरा बाप चलने फिरने से मअज़ूर मेरी माँ नाबीना थी मैंने दोनों की सत्तर साल ख़िदमत की।

जब मेरी माँ मरने लगी तो उसने मेरे लिए दुआ माँगी, या अल्लाह इसकी उम्र दराज़ फ़रमा और वह तेरी इबादत में

ज़िन्दगी बसर करे फिर जब मेरे वालिदे गिरामी फ़ौत हुए तो उन्होंने दुआ माँगी या अल्लाह मेरे बेटे को ऐसे मकान में रख जहाँ शैतान न घुस सके। माँ बाप को दफ़्नाने के बअद मैंने दरयाये साहिल पर इस क़ुब्बह को देखा अन्दर दाख़िल हुवा और क़ुब्बह इस किनारए दरिया पर था अल्लाह तआला ने फ़रिश्ते को हुक्म फ़रमाया उसने क़ुब्बह उठाकर दरिया के अन्दर उसी जगह पर रख दिया जहाँ से आप ने उठवाया है। सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया आप इसमें कब से दाख़िल हुए। अर्ज़ की इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़मानह से। सुलेमान अलैहिस्सलाम ने तारीख़ देखी तो उसको दो हज़ार चार सो साल हो चुके थे लेकिन वह अभी नौजवान अपनी जवानी में था उसमें बुढ़ापे के आसार नज़र नहीं आते थे। आप ने पूछा आप के तआम का क्या इन्तिज़ाम है। अर्ज़ की ऐ अल्लाह के नबी हर रोज़ सब्ज़ रंग परिन्दह भुना हुवा अल्लाह तआला की तरफ़ से मिलता है जिसकी शक्ल इन्सानी सर के मुशाबह होती है। जब मैं उसे खाता हूँ तो दुनयवी निअमतों के तमाम ज़ाइक़े उसी में महसूस करता हूँ और उसी से मेरी भूक प्यास चली जाती है। और गरमी सरदी और नींद और सुस्ती और वहशत दूर हो जाती है। सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम मेरे साथ रहना चाहिते हो या आप को वापस लौटा दिया जाये। अर्ज़ की मुझे वापस लौटाइए हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने आसिफ़ को फ़रमाया इसे वहाँ पहुँचा दो।

सबक़ : सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया देखिए अल्लाह तआला ने वालिदैन की किस तरह दुआ मुस्तजाब फ़रमाई इसी लिए लाज़िम है कि वालिदैन की नाराज़गी से बचो।

हदीस शरीफ़ : एक शख़्स हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ की कि मुझे जंग पर साथ ले चलिए, आप ने फ़रमाया कि क्या तेरी वालिदह ज़िन्दह है। अर्ज़ की ज़िन्दह है। फ़रमाया

उसकी ख़िदमत करो क्योंकि बहिश्त माँ के क़दमों के नी चे है।

हदीस शरीफ़ : में है कि बहिश्त की ख़ुशबू पांच सो साल की दूरी से सूँघी जायेगी लेकिन माँ बाप का नाफ़रमान और क़तअे रहेम (आपस में दुशमनी) करने वाला उस ख़ुशबू से महरूम रहेगा।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को तंबीह

मरवी है कि जब यअक़ूब अलैहिस्सलाम किनआन से मिस्र तशरीफ़ लाये तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम वालिदे गिरामी की तअज़ीम के लिए न उठे तो अल्लाह तआला ने बज़रीअह वही यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को फ़रमाया कि आप को अपनी अज़मत पर नाज़ है याद रखिए मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम मैं आप की पुश्त से नबी नहीं पैदा करूँगा। (इसलिए कि आप वालिदे गिरामी की इज़्ज़त व अज़मत के आदाब बजा नहीं लाये) कज़ाफ़िल अहया

मसलह : जब माँ बाप दोनों में से किसी एक दूसरे की रज़ा व अदमे रज़ा की तरजीह का मौक़अ दरपेश हो मसलन वालिद साहिब को राज़ी करना चाहता है तो वालिदह नाराज़ होती है अगर वालिदह की ख़िदमत करता है तो वालिद नाराज़ होता है तो वालिद की रज़ा को तरजीह दे लेकिन सिर्फ़ तअज़ीम व तकरीम में क्योंकि सब औलाद बाप की तरफ़ मनसूब होती है और ख़िदमत और इनआम में वालिदह को तरजीह दे यहाँ तक कि माँ बाप से मुलाक़ात के वक़्त बाप की तअज़ीम के लिए पहले उठे और कुछ इनआम व दीगर अशया देते वक़्त माँ को पेश करे।

नूह अलैहिस्सलाम के बे अदब बेटे की सज़ा

हज़रत वहब से मरवी है कि जब नूह अलैहिस्सलाम कशती से बाहर तशरीफ़ लाये तो आराम फ़रमाया। नींद की हालत में उनका सत्र खुल गया जिसे देखकर आप का बेटा हाम हँस पड़ा और आप के सत्र को न ढाँपा। जब आप के बेटे साम

व याफ़स को मअलूम हुवा तो आकर वालिदे गिरामी पर कपड़ा डाल दिया। नूह अलैहिस्सलाम बेदार हुए तो आप को तमाम हाल सुनाया गया आप ने हाम से फ़रमाया कि अल्लाह तआला तेरे जिस्म को तबदील करदे। चुनाँचह काले सूडानी और हबशी उन्हीं की औलाद से हैं और क़यामत तक उन्हें दुनयवी ज़िल्लत में मुब्तिला रख्खा गया।

माँ नाराज़ थी

मरवी है कि एक शख़्स पर नज़अ तारी थी और कलिमए शहादत से मैहरूम था। हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उसकी ख़बर दी गई। आप उसके यहाँ तशरीफ़ ले गए और उसे कलिमए शहादत तलक़ीन फ़रमाई। लेकिन कोशिश के बावजूद अपनी ज़बान पर कलिमए शहादत न ला सका। हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह शख़्स नमाज़ नहीं पढ़ता या ज़कात नहीं देता या रोज़े नहीं रखता था ? सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ की :नमाज़ व रोज़ह का बड़ा पाबंद था। आप ने फ़रमाया : क्या इसने वालिदैन की नाफ़रमानी तो नहीं की। सब ने अर्ज़ की : हाँ यही वजह है। आप ने फ़रमाया : इसकी वालिदह को मेरे सामने लाओ। वह हाज़िर हुई तो वह बहुत बूढ़ी लाग़र और नाबीना थी, आप ने फ़रमाया : क्या तू इसे मआफ़ नहीं करती, क्या तूने इसे जहन्नम की आग के लिए नौ माह पेट में उठाए रख्खा, क्या आग के लिए तूने इसे दो साल दूध पिलाया। अगर तू मआफ़ नहीं करती तो माँ की मम्ता कहाँ गई ? (माँ ने मआफ़ कर दिया) उस नौजवान की ज़बान कलिमए शहादत के लिए खुल गई।

जरीज राहिब का क़िस्सह

हदीस शरीफ़ में है कि जरीज एक आबिद ज़ाहिद मर्द था उसने इबादत ख़ानह (गिर्जा) बनाया और उसी में रहता था।

एक दिन माँ आई तो वह नमाज़ पढ़ रहा था। माँ ने पुकारा या जरीज। जरीज ने दिल में सोचा माँ बुला रही है और नमाज़ पढ़ रहा हूँ। माँ जवाब न पाकर वापस लौट आई। इसी तरह दूसरे दिन आई और पुकारा या जरीज उस वक़्त भी वह नमाज़ में था। जवाब न दिया। माँ वापस लौट गई। तीसरे रोज़ भी ऐसे ही हुवा जवाब न मिलने पर माँ ने कहा अल्लाह इसे मौत न दे जब तक किसी ज़ानियह औरत के चेहरे को न देखले। यह कहकर चली गई। बनी इस्राईल ने हस्बे आदत जरीज को फंसाना चाहा क्योंकि वह लोग उसकी इबादत से ख़ुश न थे। चुनांचह शहेर की एक कुंजरी (रेन्डी) जिसे अपने हुस्न पर नाज़ था उससे बात की तो उसने कहा तुम लोग जिसे चाहो मैं उसे अपने हुस्न में फंसा लूँ हुज़ूर नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस औरत को जरीज के लिए कहा गया तो वह हार सिंगार करके जरीज के सामने आगई लेकिन जरीज ने उस तरफ़ तवज्जोह न की। कुंजरी ने जरीज से मायूस होकर एक चरवाहे से ज़िना कराया जो वह सूमिआ (गिर्जा) के क़रीब रहता था उससे कुंजरी हामिलह हो गई जब बच्चह पैदा हुवा तो शोर बरपा कर दिया कि यह जरीज से है। लोगों ने जरीज को गिर्जा से नीचे उतारा और उसका गिर्जा तोड़ा फोड़ा और उसे मारते हुए बाहर निकाल लाये। जरीज ने पूछा मुझे कौनसे जुर्म की सज़ा दे रहे हो कहा तूने फ़ला कुंजरी से ज़िना किया उससे बच्चह पैदा हुवा है वह तेरा नुतफ़ह है। जरीज ने फ़रमाया वह बच्चह कहाँ है। बच्चह उसके पास लाये। फ़रमाया मुझे सिर्फ़ दोगानह पढ़ने दो फिर जो चाहो करो। चुनांचह दो रकअत नमाज़ पढ़कर बच्चह के क़रीब आकर उसके पेट पर लकड़ी मारकर कहा ऐ ग़ुलाम तेरा बाप कौन है कहा फ़लाँ चरवाहा। नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

लोग जरीज की तरफ़ मुतवज्जह हुए और उसे चूमते थे और तबर्रुक के तौर उसे हाथ वग़ैरह लगाते। और कहा कि ऐ

जरीज हम तेरा इबादत ख़ानह सोने का बनवाते हैं। कहा बस इसी तरह मिट्टी का इबादत ख़ानह तैयार करदो। चुनांचह सबने मिलकर इबादत ख़ानह मिट्टी और गारे का तैयार किया।

नोट : साबित हुवा कि महबूबाने ख़ुदा के हाथों को चूमना और उनसे बरकत हासिल करना और उनकी तअज़ीम व तकरीम बजा लाना तरीक़ए ईमान है। यही वजह है कि हुज़ूर नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी फ़ज़ीलत में यह इरशादे गिरामी बयान फ़रमाया है अगर तक़बील व मसहे औलिया नाजाइज़ व हराम होता तो आप इस क़ौल को बयान करके रद फ़रमाते। आप का रद न करना यह जवाज़ की दलील है।

चिड़िया का पाँव काटा है

अल्लामह ज़मख़शरी से किसी आलिमे दीन ने पूछा कि आप का पाँव कैसे कट गया था उसने कहा कि मैने बचपन में एक चिड़िया को पकड़ कर धागे से उसके पाँव को जकड़ा और फिर अपनी तरफ़ खींचा तो उसका पाँव कट गया। मेरी वालिदह उसकी हालते ज़ार से सख़्त मग़मूम हुईं और मुझे फ़रमाया बेटा जैसे तूने चिड़िया का पाँव काटा है ख़ुदा करे तेरा पाँव भी ऐसे कट जाये। जब मैं इल्म की तहसील के लिए बुख़ारा को गया तो रास्तह में सवारी से गिरा तो मेरा पाँव टूट गया। बअज़ ने कहा कि रास्तह में पाँव सरदी से सूख गया जिसे फिर काटना पड़ा। इसी लिए ज़मख़शरी लकड़ी के सहारे चलता था।

(कज़ाफ़ी रौज़तिल अख़यार)

हिकायत : हज़रतुल उस्ताज़ अबू इसहाक़ रहमतुल्लाह तआला की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुवा और अर्ज़ की कि मैंने रात को ख़्वाब में देखा है कि आप की दाढ़ी मुबारक में जौहर व याक़ूत हैं। आप ने फ़रमाया : तेरा ख़्वाब सच्चा है इस लिए कि मैंने कल अपनी दाढ़ी वालिदह माजिदह के क़दमों के तलओं को लगाई थी।

अज़मते वालिदैन

मसलह : अपने माँ बाप की ख़िदमत ख़ुद करे किसी दूसरे के सपुर्द न करे।

मसलह : इन्सान को अपने माँ बाप और उसताद (और पीर व मुर्शिद) की ख़िदमत से शर्म न करनी चाहिए इसी तरह बादशाह (हाकिमे वक़्त) और मेहमान का हुक्म है।

मसलह : बाप के लिए नमाज़ का इमाम भी न बने अगरचेह वह उससे फ़क़ीह तर है (अगर वह हुक्म दें या उनको मसाइल से कुछ भी वाक़िफ़यत नहीं तो जाइज़ है।)

मसलह : माँ बाप के आगे भी न चले हाँ अगर रास्तह साफ़ करने की ज़रूरत दरपेश हो तो जाइज़ है।

मसलह : किसी ऐसी जगह पर न बैठे जहाँ उसके माँ बाप नीचे बैठे हों जब कि उससे माँ बाप की इहानत होती हो।

मसलह : किसी मआमिलह में माँ बाप से सबक़त न करे मसलन खाने पीने और बैठने और गुफ़्तगू में वग़ैरह वग़ैरह।

मसलह : अगर बाप बद मज़हब है वह उसे अपनी इबादत गाह में ले जाना चाहिता है तो ना जाये, हाँ अगर बाप उसे किसी मज़हबी चीज़ को अपने यहाँ उठा लाने का हुक्म दे तो उसे बजा लाये।

मसलह : बाप शराब लाने का हुक्म दे तो न लाये अगर शराब पीकर बरतन (ग्लास, बोतल वग़ैरह) उठाने का हुक्म दे तो यह हुक्म मानना ज़ाइज़ है।

मसलह : इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने फ़रमाया कि अगर उसे माँ बाप हुक्म फ़रमायें कि हांडी के नीचे आग जलाये हालाँकि उस हांडी में ख़िंज़ीर का गोश्त पकाया जा रहा है तो आग जलाने में हर्ज नहीं।

मसलह : माँ बाप से आर कर के अपने आप को किसी दूसरे मशहूर व मअरूफ़ शख़्सियत की तरफ़ मन्सूब न करे इस

लिए कि यह लअनत का मूजिब है।

हदीस शरीफ़ : हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

अपने आप को दूसरी ज़ात में मंसूब करने वाले पर अल्लाह तआला और फ़रिश्तों और तमाम लोगों की लअनत हो उसकी न कोई इबादत क़ुबूल होगी न नेकी। (इबादत से मुराद फ़राइज़ और नेकी से मुराद नवाफ़िल हैं)

हदीस शरीफ़ : जो शख़्स हर जुमअ अपने माँ बाप या उनमें से किसी एक की क़ब्र की ज़्यारत करता है तो उसे माँ बाप से एहसान करने वाला लिखा जायेगा।

शेख़ सअदी क़द्दसा सिर्रहू ने फ़रमाया :

तरजुमह : बहुत बरस गुज़रने पर भी तू कभी अपने माँ बाप की क़ब्र पर फ़ातिहा ख़्वानी के लिए नहीं गया बताओ जब तूने अपने बाप के साथ भलाई नहीं किया तो फिर अपनी औलाद से किस मुँह से भलाई की उम्मीद करता है।

हिकायत व रिवायत

एक शख़्स हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ की कि मेरे माँ बाप बूढ़े हो गए हैं मेरे लिए उनकी अदायगिए हुक़ूक का कोई तरीक़ह है ताकि मैं अपनी बचपन की तरबियत का हक़ अदा कर सकूँ आप ने फ़रमाया तुम उनका कोई हक़ नहीं अदा कर सकते इस लिए कि उन्होंने तरबियत तेरी ज़िन्दगी की बक़ा की ख़ुशी में की थी और तू उनकी ख़िदमत उनकी मौत की ख़ुशी में करेगा।

बाप कुल जायदाद का मालिक है

मरवी है कि एक शख़्स ने हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की कि उससे उसका बाप उसका माल व असबाब छीन लेता है। हुज़ूर सरवरे

आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके बाप को बुलाया तो लाठी के सहारे चलता हुवा बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा। आप ने उससे माजरा पूछा तो उसने अर्ज़ की जब यह कमज़ोर और मैं क़वी था और मैं दौलत मंद और यह फ़क़ीर था तो मैं इसे माल व असबाब से नहीं रोकता था अब मैं ज़ईफ़ और यह क़वी और यह दौलत मंद और मैं फ़क़ीर हूँ लेकिन मुझ से अपने माल के मुतअल्लिक़ बख़ीली करता है। हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बूढ़े की बात सुनकर रो पड़े और फ़रमाया कि तेरी बात जिस पत्थर और ढीले ने सुनी सब रोये। उसके बअद शिकायत करने वाले नौजवान को फ़रमाया : तू और तेरा तमाम माल तेरे बाप का है ।

हदीस शरीफ़ : हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि मैंने सुना है कि फ़ख़्रूल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर मैं अपने बअद अपनी उम्मत के हालात के बदलने का ख़ौफ़ न करता तो मैं तुम्हें हुक्म फ़रमाता कि चार शख़्सों के लिए गवाही दो कि वह बहेशती हैं :

(१) वह औरत जिसने अपने शौहर को महेज़ अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर महेर बख़्श दिया और उसका शौहर भी उसपर राज़ी हुवा.

(२) ज़्यादह बाल बच्चों वाला जो हलाल कमाई से अपने कुंबे का पेट पालता हो।

(३) वह तोबह करने वाला जो अपने गुनाहों की तरफ़ ऐसे नहीं लौटता जैसे पिस्तान (छाती) से निकला हुवा दूध पिस्तान में वापस नहीं लौट सकता।

(४)वालिदैन के साथ एहसान व मुरव्वत से पेश आने वाला।

वालिदैन को नसीहत

माँ बाप पर लाज़िम है कि अपनी औलाद के साथ ऐसा ग़लत बरताव न करें कि जिससे औलाद नाफ़रमानी पर मजबूर हो जाये

बल्कि उनके साथ ऐसा बरताव करें जो फ़रमाँबरदारी में मदद कर सकैं ।

फ़रमाँबरदारी का सिलह

बनी इस्राईल का एक यतीम बच्चह हर काम अपनी वालिदह से पूछ कर उनकी मरज़ी के मुताबिक़ किया करता था। उसने एक ख़ूबसूरत गाय पाली और हर वक़्त उसकी देख भाल में मसरूफ़ था। एक मरतबह एक फ़रिशतह इन्सानी शक्ल में उस बच्चे के सामने आया और ख़रीदने का इरादह ज़ाहिर किया। बच्चे ने क़ीमत पूछी तो फ़रिशते ने बहुत थोड़ी क़ीमत बताई। जब बच्चे ने माँ को इत्तिलाअ दी तो उसने इनकार कर दिया।फ़रिशतह हर बार क़ीमत बढ़ाता रहा और बच्चह हर बार अपनी माँ से पूछ कर जवाब देता रहा। जब कई मरतबह ऐसा हुवा तो बच्चे ने मैहसूस किया कि शायद मेरी वालिदह गाय बेचने पर राज़ी नहीं हैं। लिहाज़ा बच्चे ने साफ़ साफ़ इनकार कर दिया कि गाय किसी क़ीमत पर नहीं बेची जा सकती। फ़रिशते ने कहा तुम बड़े ख़ुश बख़्त और ख़ुश नसीब हो कि हर बात अपनी वालिदह से पूछ कर करते हो। अनक़रीब तुम्हारे पास कुछ लोग इस गाय को ख़रीदने के लिए आयेंगे तो तुम इस गाय की अच्छी क़ीमत वसूल करना।

दूसरी तरफ़ बनी इस्राईल में एक आदमी के क़त्ल का वाक़िअह पेश आया और उन्हें जिस गाय की क़ुरबानी का हुक्म मिला उसी बच्चे की गाय थी (जिसका ज़िक्र सूरेह बक़रह में आया है) चुनांचह बनी इस्राईल के लोग जब उस बच्चे से गाय ख़रीदने के लिए आये तो उस बच्चे ने कहा कि इस गाय की क़ीमत इसके वज़न के बराबर सोना अदा करने के बराबर है। बनी इस्राईल के लोगों ने इतनी भारी क़ीमत अदा करके गाय ख़रीद ली। मुफ़स्सिरीन ने तफ़सीर में लिखा है कि उस बच्चे को यह दौलत वालिदैन के अदब और उनकी इताअत की वजह से मिली। तफ़सीरे तिबरी में भी इसी तरह का वाक़िअह मनक़ूल

है। इस से मअलूम हुवा कि वालिदैन की ख़िदमत व अदब का कुछ सिलह इस दुनिया में भी दे दिया जाता है।

इमाम आज़म और माँ का अदब

हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ह रहमतुल्लाह अलैहि अपनी वालिदह का बहुत अदब व एहतराम किया करते थे। जब कभी उनकी वालिदह साहिबह को कोई मसलह मअलूम करना होता तो वह एक बूढ़े फ़क़ीह से दरयाफ़्त करतीं। ऐसे मौक़अ पर इमाम आज़म अबू हनीफ़ह रहमतुल्लाह अलैहि अपनी वालिदह को ऊँट पर सवार करते और ख़ुद ऊँट की नकील पकड़ कर पैदल चलते। जब लोग देखते। तो अदब व एहतराम की वजह से रास्ते के दोनों तरफ़ खड़े होकर सलाम करते। इमाम आज़म अबू हनीफ़ह रहमतुल्लाह अलैहि की वालिदह उनसे मसलह दरयाफ़्त करतीं। कई मरतबह ऐसा होता कि बुज़ुर्ग फ़क़ीह को मसलह का सहीह हल मअलूम न होता तो वह आहिस्तह से इमाम आज़म अबू हनीफ़ह रहमतुल्लाह अलैहि से पूछ लेते फिर ऊँची आवाज़ से आप की वालिदह को बता देते। इमाम आज़म अबू हनीफ़ह रहमतुल्लाह अलैहि की तवाज़ो और उनके अदब का यह आलम था कि सारी ज़िन्दगी अपनी वालिदह पर यह ज़ाहिर न होने दिया कि जो मसाइल आप उनसे पूछती हैं वह मैं ही तो बताता हूँ। यह सब इस लिए था कि वालिदह साहिबह की तबीअत जिस तरह मुतमइन होती है होनी चाहिए।

वालिदैन के साथ मैदाने हश्र में सुलूक करने वाले का अजीब क़िस्सह

हदीस में एक शख़्स के मीज़ाने अमल के दोनों पलड़े बराबर हो जायेंगे अल्लाह तआला फ़रमायेगा तुम जन्नत वालों में से नहीं और न ही दोज़ख वालों में से हो तो उस वक़्त एक फ़रिशतह एक काग़ज़ लेकर आयेगा और उसको तराज़ू के एक

पलड़े में रख्खेगा उस काग़ज़ में (उफ़) लिखी होगी तो यह टुकड़ा नेकियों पर भारी होजायेगा क्योंकि यह वालिदैन के नाफ़रमानी का ऐसा कलिमह है जो दुनिया के पहाड़ों से भारी है, चुनांचह उसे दोज़ख़ में ले जाने का हुक्म दिया जायेगा कहते हैं वह शख़्स मुतालेबह करेगा कि उसको अल्लाह तआला के पास वापस ले चलें तो अल्लाह तआला फ़रमायेगा उसे वापस लाओ। फिर अल्लाह तआला उस से सवाल फ़रमायेगा ऐ नाफ़रमान बंदे किस वजह से तुम मेरे पास आने का मुतालेबह कर रहे थे ? वह कहेगा इलाही तूने देख लिया मैं दोज़ख़ की तरफ़ जारहा हूँ और मुझे कोई जाये फ़रार नहीं मैं अपने वालिदैन का नाफ़रमान था हालाँकि वह भी मेरी तरह दोज़ख़ में जा रहे हैं मेरी नाफ़रमानी की वजह से मेरे अज़ाब को बढ़ा दे और मेरे वालिदैन को जहन्नम से निजात देदे। सुब्हानल्लाह रब की रहमत मुस्कुरा उठेगी अल्लाह तआला फ़रमायेगा यह भी माँ बाप के साथ भलाई है जा तुझे इस नेकी के इवज ब़ख़्श दिया।

माँ का दिल

एक घरमें एक सास थी उसकी एक बहू थी। बहू के दो एक बच्चे और शौहर। बहू ख़ुदा के फ़ज़्ल से ऐसी मिली थी कि बस मआज़ अल्लाह। शौहर के लिए भी वबाले जान थी और सास के तो ख़ून ही की प्यासी थी। बस गोया शेख़ सअदी अलैहिर्रहमह का यह शेर सादिक़ आता है।

ज़ने बद दर सराये मर्दे निकू   हम दरीं आलम अस्त दोज़ख़ ऊ

यअनी बुरी औरत किसी शरीफ़ के घरमें चली गई। तो उस बेचारे के लिए दुनिया ही में दोज़ख़ हो जाती है।

यह बहू हमेशह इसी कोशिश में रहती थी कि किसी तरह सास को घर से निकाल कर बाहर करे मगर कामियाब न होती थी। क्योंकि सास बेचारी सीधी साधी थी वह किसी मआमिलह में दख़ल भी न देती थी। एक दिन उस बहू ने एक गुल खिलाया। बैठे बैठे खेलने, हाथ पाँव पटकने लगी, गुल

मचाने लगी, शौहर ने जो देखा तो बहुत प्रेशान हुवा, पूछा कि यह क्या मआमिलह है बीवी ने कहा कि तुम मुझे नहीं जानते कि मैं कौन हूँ ? मैं हूँ कमाल शाह जिन्न।

शौहर ने पूछा क्यों आये हो ? कमाल शाह ने कहा कि चूँकि तुम्हारी माँ की वजह से हमारी सवारी को तक्लीफ़ रहती है इस लिए मैं चाहता हूँ कि अपनी माँ को अलग कर दो शौहर ने कहा कि बहुत अच्छा ? आप जाइए मैं इन्तिज़ाम कर दूँगा। कमाल शाह के जाने के बअद बीवी ने पूछा कि यह क्या हुवा था ? शौहर ने सब क़िस्सह बताया। बीवी ने कहा कि अच्छी बात है आप अगर मुझको और अपने बच्चों को चाहते हैं तो बुढ़िया को अलग करदेना ही मुनासिब है शौहर साहिब ने जो बिल्कुल बुदधू टाइप के आदमी थे घर के क़रीब ही एक दूसरा क़ुवाटर माँ के लिए ले दिया अब माँ उसमें रहने लगी साहिबज़ादे साहिब वहीं जाकर दोनों वक़्त खाना माँ को पहुँचा आते थे।

बहू बेगम ने जब देखा कि अब बुढ़िया बग़ैर काम काज के दोनों वक़्त खाना खाती है यूँ तो घर में कुछ कर लिया करती थी तो एक दिन फिर ख़ुद बख़ुद खेलने लगी,। शौहर ने पूछा आप कौन साहिब हैं ? बीवी नें कहा मैं हूँ कमाल शाह जिन्न, शौहर ने अर्ज़ किया कि अब क्या मतलब है। कमाल शाह ने कहा अब हमको एक बूढ़ी औरत का दिल चाहिए, यह कहकर कमाल शाह तो रुख़्सत हो गए, बीवी को होश आया, सब माजरा दरयाफ़्त किया बुदधू मियाँ ने बताया, बीवी ने कहा यह तो बड़ी मुश्किल हुई अब किस बुढ़िया का दिल लाया जाये नहीं लाया जाता है तो बच्चे बिन माँ के होते हैं घर बरबाद होता है लाया जाता है तो पकड़ धकड़ का अंदेशहा है, अब अगर मेरी राय लो तो अम्माँ जान ही फ़ालतू हैं, उन्हीं का दिल पेश कर दो और मैं क्या बताऊँ। बुदधू मियाँ ने बीवी का मशवेरह क़ुबूल किया, रात को छुरी तेज़ करके माँ के घर पहुँचे, माँ समझी कि

बेटा खाना लाया होगा, हस्बे मअमूल दरवाज़ह खोला, बेटा अंदर दाख़िल हुवा, माँ को लिटाकर पेट में छुरी घोंप दी दम भर में माँ बेचारी जाँ बहक़ हो गई नालायक़ बेटे ने माँ का दिल निकाला और बड़े फ़ख़्र के साथ वापस हुवा, आते वक़्त दरवाज़े की सीढ़ी से पाँव जो फिस्ला तो ज़मीन पर धड़ाम से गिरा उस वक़्त माँ का दिल जो हाथ में था उसमें से आवाज़ आई।

हाय बेटा तेरे चोट तो नहीं लगी ?

यह आवाज़ सुनकर लड़के को इबरत हासिल हुई। आइन्दह जो कुछ हुवा हो, नौजवानो! मैंने तुम को माँ की मुहब्बत का मंज़र दिखाया। इस से हमारी माओं, बहनों भाइयों को बड़ा सबक़ हासिल करना चाहिए।

इसके यह मअना नहीं कि बीवी का कुछ हक़ ही नहीं या बीवी को शौहर की मुहब्बत ही नहीं होती, होती है और बहुत होती है बीवी अगर नेक हो तो वह अपने शौहर की आशिक़ होती है। अपनी सास और ससुर की फ़रमाँबरदार और इताअत गुज़ार होती है अपने शौहर के पूरे ख़ानदान के लिए बाइसे इफ़्तिख़ार होती है मेरा कहना तो सिर्फ़ यह है कि माँ को जो मुहब्बत अपनी औलाद से होती है उस मुहब्बत की मिसाल नहीं मिलती। यह मुहब्बत बे ग़र्ज़ होती है। किसी रिशतह की वजह से नहीं पैदा होती बल्कि ख़ूनी होती है। उसी वक़्त से होती है जब से बच्चह पेट में आता है और किसी सबब से मुनक़तअ (ख़त्म) नहीं होती।(ज़ीनतुल मीलाद)

माँ बाप का दरजह

ज़ुलफ़ेक़ारे हैदरियह जो एक बहुत बड़े आलिमे दीन अल्लामए वक़्त मौलाना अब्दुन्नबी हैदर शाह साहिब क़ादरी हनफ़ी रहमतुल्लाह अलैहि की तसनीफ़ है उसमें किफ़ायतुश शोअबी और मग़फ़िरतुल ग़फ़ूर के हवालह से एक हदीस शरीफ़ है जिसका तर्जुमह और मतलब यह है कि : एक बार एक शख़्स

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवा और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैंने क़सम खाई है कि जन्नत की चौखट और हूर की पेशानी का बोसह दूँगा अब क्या करूँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि **अनतक़ब्बल रिजलुल उम्मि व वजहिल अब्बि।** यअनी अपनी माँ के क़दम और बाप की पेशानी चूम ले उसने अर्ज़ किया कि या हबीबल्लाह मेरे माँ बाप का इन्तिक़ाल हो चुका। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **क़ब्बिल क़बरहुमा** कि उनकी क़ब्रों को बोसह दे यअनी माँ की क़ब्र के पाँव की तरफ़ और बाप की क़ब्र के सिरहाने की तरफ़ चूमले बस तेरी क़सम पूरी हो जायेगी। उसने अर्ज़ किया कि या हबीबल्लाह अगर न पहचानूँ वालिदैन की क़ब्र को तो आप ने हुक्म दिया कि ज़मीन पर दो लकीरैं खींच ले एक को माँ की क़ब्र तसव्वुर कर लो और एक को बाप की क़ब्र फ़र्ज़ करले और उन दोनों के पायेंती और सिरहाने को चूम ले जब भी तेरी क़सम पूरी हो जायेगी। लकीर को अर्बी में ख़त कहते हैं और दो लकीरों को ख़त्तैन कहते हैं। इसी वजह से इस हदीस शरीफ़ को ख़त्तैन कहते हैं। देखिए यह मरतबह है माँ बाप का और यह भी साबित हुवा कि माँ बाप के क़ब्रों को और बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात को चूमना जाइज़ है। अगर गुनाह होता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हरगिज़ गुनाह का हुक्म किसी हाल में न फ़रमाते। (ऐज़न)

माँ की मम्ता

प्यारे दीनी भाइयो ! माँ को अपनी औलाद से बेहद मुहब्बत होती है। वह सब कुछ बरदाश्त कर लेती है लेकिन औलाद को कोई तक्लीफ़ पहुँचे तो बरदाश्त नहीं कर सकती। माँ को अपनी जान से औलाद की जान प्यारी होती है। दरजे ज़ेल वाक़िअह से माँ की मम्ता का अन्दाज़ह होता है।

सैयदुना हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के ज़मानह में दो

औरतें थीं दोनों के गोद में बेटे थे, दोनों कहीं जा रही थीं कि रास्ते में एक भेड़िया आया और एक का बच्चह उठा कर ले गया। वह औरत जिसका बच्चह उठाकर भेड़िया ले गया था दूसरी औरत के बच्चे को छीनकर बोली यह मेरा बच्चह है। बच्चे की माँ ने कहा बहेन अल्लाह से डरो, यह बच्चह तो मेरा है। उन दोनों में जब झगड़ा बढ़ गया तो दोनों हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के पास आईं। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने वह बच्चह बड़ी औरत को दिला दिया। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को इस बात की ख़बर हुई तो आप ने फ़रमाया अब्बा जान! एक फ़ैसिलह मेरा भी है और यह है कि छुरी मंगवाई जाये। मैं इस बच्चे को दो टुकड़े करता हूँ और आधा बड़ी को और आधा छोटी को दे देता हूँ। यह फ़ैसिलह सुनकर बड़ी तो ख़ामोश रही लेकिन छोटी बोली कि हुज़ूर बच्चह बड़ी को ही दे दीजिए लेकिन ख़ुदारा बच्चे के टुकड़े न कीजिए। हज़त सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया बच्चह इसी औरत का है क्योंकि इसके दिल में मम्ता का दर्द है। चुनांचह वह बच्चह उसी को दे दिया गया। (फ़तहुल वारी, बहवालह फ़ैज़ाने शरीअत)

हुज़ूरे अक़दस अलैहिस्सलातु वस्सलाम के वालिदैन

प्यारे आक़ा अलैहिस्सलातु वस्सलाम के चाहने वालो! सब से ज़्यादह अच्छे सुलूक की हक़दार माँ है उसके बअद बाप ताजदारे मदीनह हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिदे मोहतरम आप की पैदाइश से पहले इन्तिक़ाल कर चुके थे और आप की वालिदह मोहतरमह छे (६) साल की उम्र में अल्लाह तआला को प्यारी हो गईं और दो साल के बअद दादा जान का सायह भी सर से उट गया। हुज़ूर अक़्दस सैयदे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूध पिलाने का (ज़्यादह) शर्फ़ क़बीलए सअद की ख़ुश नसीब औरत हज़रत हलीमह

सअदियह को हासिल हुवा इस तरह वह रज़ाई माँ हुई। बचपन के बअद वह हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उस वक़्त तशरीफ़ लाईं कि जब आप फ़राइज़े रिसालत से मुशर्रफ़ थे ताजदारे मदीनह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तअज़ीम के तौर पर उठ कर मिले और उनके बैठने के लिए अपनी चादरे मुबारक बिछा दी जिस पर हज़रत हलीमह सअदियह बैठ गईं। एक शख़्स ने पूछा यह कौन ख़ुश क़िस्मत ख़ातून हैं ? तो सहाबए किराम रिज़वानुल्लहि तआला अलैहिम अजमईन ने कहा यह शहंशाहे कौनैन हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ाई माँ हैं। (अबू दाऊद। बहवालह ऐज़न)

माँ की दुआ का असर

हज़रत सुलैम बिन अय्यूब फ़रमाते हैं मैं दस बरस का था और मुझ से सुरेह फ़ातिहा तक नहीं पढ़ी जाती थी तो बअज़ मशाइख़ ने मुझ से फ़रमाया कि तू अपनी माँ से इल्तिजा कर कि वह तेरे क़ुरआन और इल्म के लिए दुआ करे। मैंने अपनी माँ से अपने इल्म के लिए दुआ कराई। हज़रत इब्ने सुबकी फ़रमाते हैं माँ की दुआ का असर ऐसा हुवा कि हज़रत सुलैम बिन अय्यूब ज़बर दस्त आलिम हुए गोया मैदाने इल्म के ऐसे शैहसवार थे कि कोई उनका गर्द न पाता और निशाने क़दम तक न पहुँच सकता था। (नुज़हतुल मजालिस। बहावालह ऐज़न)

वालिदैन की ख़िदमत का सिलह

मनक़ूल है कि अगले ज़माने में तीन शख़्स रिज़्क़ की तलाश में सफ़र के लिए निकले रास्ते में बारिश होने लगी तीनों एक ग़ार में छुप गए अचानक एक चट्टान लुढ़क कर ग़ार के मुँह पर आकर रुक गई और ग़ार का मुँह बन्द हो गया। उन्होंने आपस में यह तय किया कि हर एक अपने अच्छे आमल को याद करके दुआ माँगे ताकि चट्टान हट जाये उनमें से एक ने कहा ऐ

अल्लाह ! मेरे वालिदैन बूढ़े थे मैं शाम के वक़्त उनसे पहले किसी बच्चे को दूध नहीं पिलाया करता था एक मरतबह ऐसा हुवा मैं किसी काम से बाहर गया हुवा था जब वापस आया तो वह सो चुके थे मैंने दूध दुहा और सारी रात दूध का प्यालह लेकर खड़ा रहा यहाँ तक कि सुबह हो गई और मेरे बच्चे सारी रात भूके सोते रहे यह सब कुछ मैंने तेरी रज़ा के लिए किया था अब तू यह चट्टान हम से हटा दे। इस दुआ के बअद चट्टान इतनी हट गई कि सूरज की रोशनी अन्दर आने लगी। दूसरे ने अपनी चचा ज़ाद बहेन से ज़िना से बाज़ रहने का ज़िक्र किया। तीसरे ने मज़दूर की अमानतदारी का ज़िक्र किया यहाँ तक कि चट्टान हट गई वह तीनों (ग़ार से) बाहर आगए।

(मुस्लिम व बुख़ारी, बहवालह ऐज़न)

अल्लाह तआला अपने रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल में हम सबके वालिदैन की मग़फ़िरत फ़रमाये, उनकी क़ब्रों पर रहमत व नूर के फूल बरसाये और हश्र के दिन नेक बन्दों के साथ उठाये और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह मर हमत फ़रमाये। (आमीन)

अपील : किताब पढ़ने के बअद सिर्फ़ एक बार कह दीजिए कि या अल्लाह इस किताब के मुसन्निफ़ के वालिदैन की मग़फ़िरत फ़रमा अल्लाह आपको दीन व दुनिया की दौलतों से माला माल फ़रमाये (आमीन)

सिराजुल क़ादरी बहराइची

बानी व मुहतमिम सबरी यतीम ख़ानह जामिअह
सरकारे आला हज़रत गंगवल बाज़ार
बहराइच शरीफ़ (यूपी)

गाज़ी किताब घर की किताबें

इस्लामी हीरे यानी सुन्नी कुइज़	150/-
गुस्ताख़ क़लम	30/-
अनवारे क़ुरआनी	20/-
मुजरिम अदालत में	60/-
तोहफ़-ए-रमज़ान	10/-
बर्के रज़विय्यत बर फ़ितन-ए-वहाबिय्यत	15/-
बर्के वहदत बर फ़ितन-ए-नजदिय्यत	40/-
तोहफ़-ए-निकाह	30/-
असली सय्यदह बीबी की कहानी	10/-
मक़ामे आला हज़रत	50/-
असली दस बीबीयों की कहानियां	10/-
दश्ते करबला	40/-
क़ब्र से जन्नत तक	20/-
लुआबे दहने मुस्तफ़ा	20/-
माँ का आंचल	20/-
अस्हाबे कहफ़	10/-
तारीख़ी कहानियां	160/-
फ़ातिहा इमाम जाफ़र सादिक़	10/-
मुनाफ़िक़ीन	25/-
अंधे नजदी देख ले	30/-
फ़ातिहा का सहीह तरीक़ह	10/-
क़ादरी रज़वी फ़ज़ाइले नमाज़	60/-
शबे बरात	15/-
शहीदाने कर्बला	10/-
आप का मदरसा	30/-
ग़ाज़ी कायदा	30/-
आइन्ना-ए-कयामत	30/-
मस्लऐ तकफीर और इमाम अहमद रज़ा	20/-